



# दी नैक्सट पोस्ट

साप्ताहिक

7

3

गोरखपुर में लोगों को आकर्षित कर रहा धनुषाकार गर्डर वाला नक़्का ओवरब्रिज

5

हमीरपुर पुल हादसा-पिलर का टूटना खड़े कर रहा गुणवत्ता पर सवाल

8

मानसिक तनाव, असहयोग या फिर खराब नतीजे

UPHIN/2023/90814

वर्ष: 03, अंक: 49

पृष्ठ संख्या: 8

मूल्य: 1.00 रु.

सोमवार 01 जून, 2026

## आईपीएल-जीत का जश्न

फाइनल में जीत के बाद खिलाड़ियों का परिवार के साथ जश्न और ट्रॉफी के साथ यादगार तस्वीरें जैसे कई पल IPL 2026 को हमेशा के लिए खास बना गए। ट्रॉफी जीतने के बाद कोहली ने अनुष्का शर्मा के साथ सेलिब्रेट किया।



### गुजरात के सामने डटे रहे कोहली

लक्ष्य का पीछा करते हुए आरसीबी के लिए कोहली के साथ वेंकटेश अय्यर पारी की शुरुआत करने उतरे। वेंकटेश इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर उतरे थे। इन दोनों बल्लेबाजों ने तेजी से खेलना शुरू किया और गुजरात के गेंदबाजों पर दबाव बनाया। वेंकटेश और कोहली के बीच अर्धशतकीय साझेदारी हुई, लेकिन पांचवें ओवर में मोहम्मद सिराज ने वेंकटेश को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। वेंकटेश 16 गेंदों पर 32 रन बनाकर आउट हुए। इसके बाद देवदत्त पडिक्कल (1), कप्तान रजत पाटीदार (15) और कृणाल पांड्या (1) के विकेट गंवाए। आरसीबी ने 91 के स्कोर पर चार विकेट गंवा दिए थे और लग रहा था कि यहां से गुजरात मैच फंसा सकती है, लेकिन सामने कोहली खड़े थे और उन्होंने गुजरात के गेंदबाजों का बेहतरीन तरीके से सामना किया। कोहली 42 गेंदों पर नौ चौकों और तीन छक्कों की मदद से 75 रन बनाकर नाबाद रहे, जबकि जितेश शर्मा 11 रन बनाकर नाबाद लौटे।

दिल्ली, एजेंसी। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) ने गुजरात टाइटंस को हराकर लगातार दूसरी बार खिताब अपने नाम कर लिया। गुजरात टाइटंस ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में आठ विकेट पर 155 रन बनाए थे। जवाब में आरसीबी ने 18 ओवर में पांच विकेट पर 161 रन बनाकर मैच जीता। आरसीबी तीसरी टीम है जिसने आईपीएल के खिताब का बचाव किया है। आरसीबी की इस जीत के हीरो विराट कोहली रहे जिन्होंने नाबाद अर्धशतकीय पारी खेलकर टीम को जीत दिलाई।



### PM मोदी से मिले तमिलनाडु CM विजय

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो न जाने किस गली में जिंदगी की शाम हो जाए

~ बशीर बद्र



### नहीं रहे मशहूर शायर डॉ. बशीर बद्र

## आपरेशन सिंदूर 2.0 की तैयारी

आर्मी चीफ उपेंद्र द्विवेदी ने कहा— अगले युद्ध के लिए एकजुट हो रहें तीनों सेनाएं

नई दिल्ली, एजेंसी। सेना प्रमुख उपेंद्र द्विवेदी ने कहा, भारत ऑपरेशन सिंदूर 2.0 की तैयारी कर रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि पहलगांम आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान की हरकतों के जवाब में सेना ने जो रुख अपनाया था, वह अभी भी कायम है। न्यूज एजेंसी एएनआई से बात करते हुए सेना प्रमुख ने इस बात पर जोर दिया कि ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है और मौजूदा हालात को दुश्मनी में अस्थायी विराम बताया। पाकिस्तान को दिया कड़ा संदेश जनरल द्विवेदी ने पाकिस्तान का सीधे तौर पर नाम लिए बिना भारत की सैन्य तैयारियों जिक्र करते हुए एक कड़ा संदेश दिया। उन्होंने संकेत दिया कि अगर कोई नया ऑपरेशन जरूरी हो जाता है तो न केवल सेना, बल्कि वायुसेना और नौसेना भी पूरी तरह तैयार हैं।

सेना प्रमुख ने कहा, भारतीय सेना और तीनों सेनाएं ऑपरेशन सिंदूर 2.0 के लिए अच्छी तैयारी कर रही हैं, अगर ऐसा होता है तो। फिलहाल, हम तीनों सेनाओं के बीच तालमेल बढ़ाने पर ध्यान दे रहे हैं और अगले युद्ध के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं...

रहना होगा बहुत सतर्क उन्होंने आगे कहा, भयुद्ध का मैदान इतना खुला है कि हर हरकत की जानकारी दूसरी तरफ वालों को होती है। इसलिए, हमें अपनी तैनाती, इस्तेमाल और अपने सैनिकों के साथ-साथ सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले नागरिकों की सुरक्षा के मामले में बहुत ज्यादा सतर्क रहना होगा।



### UP में कहर बनकर टूटी आंधी-बारिश 28 लोगों की मौत



### '2027 से ऑनलाइन होगा NEET' सुप्रीम कोर्ट में NTA ने बताया CBT मोड में होगी परीक्षा

## बिजली हुई महंगी

### फ्यूल सरचार्ज 10 फीसद तक बढ़ेगा

लखनऊ, संवाददाता। जून 2026 के बिजली बिलों में 10 प्रतिशत तक ईंधन और बिजली खरीद समायोजन अधिभार लगाने का फैसला किया है। मार्च में बिजली खरीद और ट्रांसमिशन पर बढ़ी लागत की भरपाई उपभोक्ताओं से की जाएगी। उत्तर प्रदेश के लोगों की जेब पर एक और बड़ा बोझ बढ़ गया है। बिजली भी महंगी हो गई है। जिसके कारण अगले ही महीने से बढ़ा हुआ बिल देना होगा। यूपी पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने बिजली बिल में 10 फीसदी एक्स्ट्रा चार्ज लगाने का फैसला किया है। उत्तर प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड ने जून 2026 के बिजली बिलों में 10 फीसदी ईंधन और बिजली खरीद समायोजन अधिभार लगाने का फैसला किया है।



### यूपी में बिजली हुई महंगी जून में 10% बढ़ा हुआ आएगा बिल

UPPCL की ओर से जारी आदेश के मुताबिक, मार्च 2026 में बिजली खरीद और ट्रांसमिशन पर बढ़े खर्च की भरपाई जून 2026 के बिलों के जरिए की जाएगी। यह अतिरिक्त शुल्क सभी श्रेणी के उपभोक्ताओं से वसूला जाएगा। प्रदेश में कई जगह बिजली कटौती और आपूर्ति की समस्याओं के बीच बिजली बिल में बढ़ोतरी की खबर से उपभोक्ताओं की चिंता बढ़ गई है। बिजली निगम ने सभी वितरण कंपनियों को आदेश लागू करने के निर्देश दे दिए हैं।

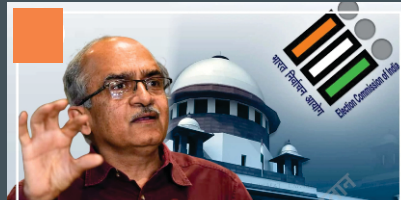
## कमिशनर ने जताई नाराजगी-हाईवे पर नहीं था डायवर्जन बोर्ड

कमिशनर द्वारा निर्माण कार्य हेतु मिट्टी खनन एवं उसके सुरक्षित परिवहन को लेकर समीक्षा की गई

गोरखपुर, संवाददाता। कमिशनर ने कहा कि गर्मी के मौसम में नदी में नहाने के दौरान बच्चों के डूबने की बढ़ती घटनाओं को रोकने के लिए दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में चेतावनी बोर्ड लगाने के निर्देश दिए गए हैं। इन पर थानाध्यक्ष, मोबाइल नंबर और एनडीआरएफ नंबर अंकित होगा। गांवों में चौपाल लगाकर अभिभावकों को भी जागरूक किया जाएगा। रामगढ़ताल इलाके क्षेत्र के अजवनिया गांव के पास बृहस्पतिवार सुबह सड़क हादसे में एनएचएआई की गंभीर लापरवाही सामने आई है।



प्रारंभिक जांच में पता चला है कि मरम्मत कार्य के नाम पर हाईवे की एक लेन बिना पूर्व सूचना के बंद कर दी गई थी। दोनों दिशाओं के वाहनों को एक ही लेन से निकाला जा रहा था, लेकिन मौके पर न तो पर्याप्त साइनेज लगाए गए थे और न ही डायवर्जन संबंधी बोर्ड सही तरीके से लगाए गए थे। इसी अव्यवस्था के कारण दो ट्रकों की आमने-सामने भिड़त हो गई, जिसमें दो लोगों की मौत हो गई। हादसे के बाद कमिशनर अनिल ढोंगरा ने जिले में चल रहे निर्माण कार्य, मिट्टी खनन और उसके सुरक्षित परिवहन को लेकर विस्तृत समीक्षा बैठक की। बैठक में एसएसपी डॉ. कौस्तुभ ने हादसे की जानकारी देते हुए बताया कि मिट्टी परिवहन कर रहे डंपरों की ओवरस्पीडिंग और बिना ढके मिट्टी ढोने से लगातार दुर्घटनाएं हो रही हैं।



### सुप्रीम कोर्ट ने भाजपा के एजेंट बन चुके 'इलेक्शन कमिशन' को खुली छूट दे दी है कि वो जिसका नाम 'वोटर लिस्ट' में डाले जिसका निकाले !

- प्रशांत भूषण, वरिष्ठ वकील



### 'होर्मुज को कोई कंट्रोल नहीं करेगा, वरना उड़ा देंगे'

### US-ईरान बातचीत के बीच ओमान को ट्रंप की धमकी



### 'डोनाल्ड ट्रंप' नाम के भैंस की कुर्बानी पर लगी रोक Iran ने उड़ाया मजाक



## सम्पादकीय

# पटरी पर लौटता तीन भाषा फार्मूला

आश्चर्य है कि दो–तीन विदेशी भाषाएं पढ़ना उन्हें अपने बच्चों पर अतिरिक्त बोझ नहीं लगता, लेकिन अपनी मातृभाषा और भारतीय भाषाएं सीखने के नाम पर वे सड़कों पर उतरने के लिए तैयार हैं। यह अनुचित है। सरकार को किसी भी हालत में झुकना नहीं चाहिए। सीबीएसई और केंद्र सरकार के ताजा निर्णय की तारीफ की जानी चाहिए, जिसमें उन्होंने नौवीं कक्षा में दो भारतीय भाषाओं को पढ़ना अनिवार्य किया है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के कार्यान्वयन का अगला कदम है। सीबीएसई के नए आदेश के अनुसार पहली जुलाई से देश में नौवीं कक्षा में तीन भाषाएं पढ़ाई जाएंगी, जिनमें दो अनिवार्य रूप से भारतीय भाषाएं होंगी। अगर पहली भाषा अंग्रेजी है तो दूसरी भाषा हिंदी या अपनी मातृभाषा होगी और तीसरी भाषा के रूप में विद्यालय संविधान की आठवीं अनुसूची की कोई भी भाषा चुन सकते हैं। इसका उद्देश्य बहुभाषी समाज की तरफ बढ़ना है, जो इस देश की हकीकत भी है। 1960 के दशक में कोठारी आयोग द्वारा दिए गए तीन भाषा सूत्र का आत्मा भी यही था कि उत्तर भारत के बच्चे दक्षिण भारत की कोई भाषा सीखें और दक्षिण भारत के बच्चे अपनी मातृभाषा के अलावा उत्तर भारत की हिंदी सीखें, लेकिन कुछ राजनीतिक स्वार्थ की वजह से इसे हिंदी थोपने के रूप में दुष्प्रचार किया गया। उत्तर भारत की शिक्षा नीति में भी यह कमी रही कि उसने दक्षिण की कोई भाषा सीखने के बजाय तीसरी भाषा के रूप में संस्कृत से काम चला कर खानापूर्ति कर ली। उम्मीद है उत्तर भारत अब ऐसी गलती नहीं करेगा। दक्षिण भारत का इसीलिए आज तक यह विरोध जारी है कि जब उत्तर भारत उसकी कोई भाषा नहीं सिखाता तो दक्षिण के राज्य भी हिंदी क्यों सीखें? इसीलिए तीन भाषा फार्मूला अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पाया। अब सरकार की नई सुविचारित नीति के तहत यह सफल होता नजर आ रहा है। वर्तमान में उत्तर भारत में विशेषकर अधिकांश पब्लिक स्कूलों में नौवीं कक्षा में तो एक भी भारतीय भाषा नहीं पढ़ाई जा रही। इनमें से कुछ स्कूल ऐसे भी हैं जिनमें 12वीं में हिंदी का सेक्शन ही नहीं है, जबकि अंग्रेजी के अलावा बच्चों को पढ़ने के लिए जर्मन, फ्रेंच, जापानी, स्पेनिश आदि विदेशी भाषाओं के विकल्प हैं। सरकारी स्कूलों में गनीमत है कि हिंदी बची हुई है, लेकिन ज्यादातर विज्ञान के विद्यार्थी सरकारी स्कूलों में भी 11वीं में हिंदी नहीं पढ़ रहे या कहेें उन्हें नहीं पढ़ाई जा रही। भाषा नीति के नए आदेश का सबसे ज्यादा विरोध यही महंगे निजी स्कूल और अभिभावक कर रहे हैं। वे शिकायत कर रहे हैं कि इसे इस सत्र में ही लागू करना था तो पहली अप्रैल से क्यों नहीं किया गया। उन्हें पता होना चाहिए कि अप्रैल में शैक्षिक सत्र जरूर आरंभ हो जाता है, लेकिन पूरे देश में शिक्षा पहली जुलाई से ही शुरू होती है, इसलिए देरी की इस बात में कोई दम नहीं है। उनका दूसरा आरोप है कि हमने फ्रेंच, जर्मन भाषाओं की किताबें खरीद ली हैं और बच्चे कई वर्षों से इन भाषाओं को पढ़ रहे हैं। अब और भारतीय भाषाएं पढ़नी पड़ेंगी तो उनके बच्चों पर अतिरिक्त बोझ बढ़ जाएगा। यह उनकी दसवीं के रिजल्ट को प्रभावित करेगा। उनकी यह भी शिकायत बचकानी है। उनसे बस यही कहना है कि अंग्रेजी तो वे जन्म से सीख रहे हैं। जर्मन और फ्रेंच भी उनको कभी अतिरिक्त बोझ नहीं लगते, पर अपनी मातृभाषा या अन्य देसी भाषाएं उन्हें बोझ क्यों लगने लगता है। क्या बच्चे अपनी मर्जी से जर्मन और दूसरी भारतीय भाषा सीखते हैं? नहीं। यह अभिभावकों और स्कूल का उन पर जबरदस्ती लदा हुआ बोझ है। क्या हमारा संविधान गलत है, जिसमें हिंदी और सभी क्षेत्रीय भाषाओं को आगे बढ़ाने और उसमें प्रशासन और शिक्षा देने की बात कही गई है? तीसरी भाषा के लिए सरकार ने सही राह सुझाई है कि इसमें बोर्ड की परीक्षा नहीं होगी, पाठ्यक्रम बहुत हल्का होगा और उसका मूल्यांकन भी आंतरिक होगा। इसका उद्देश्य साफ है कि उत्तर भारत के लोग दक्षिण की भाषाओं को जानें और दक्षिण के उत्तर भारत की। इससे दक्षिण का हिंदी और उत्तर भारत की भाषाओं का विरोध भी निर्मूल हो जाएगा और भाषाई एकता तो बढ़ेगी ही। आज यूरोप, अमेरिका से लेकर चीन, जापान जैसे देश इसलिए विकसित हैं, क्योंकि उनकी शिक्षा और प्रशासन अपनी भाषा में होता है, अंग्रेजी और दूसरी विदेशी भाषा में नहीं।

# समूचे तंत्र की विफलता

त्विषा शर्मा की मौत के मामले को मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल पुलिस और न्यायिक अधिकारियों ने जिस प्रकार संभाला, वह चुनी हुई सरकार, पुलिस–प्रशासन और अधीनस्थ न्यायपालिका जैसे राज्यव्यवस्था के सभी अंगों की विफलता का ही संकेत है। अगर मीडिया ने दखल न दिया होता तो इन सभी अंगों के बीच की साठगांठ समूचे तंत्र में नागरिकों के भरोसे को पूरी तरह नष्ट कर चुकी होती। स्वतंत्रता के 80 साल बाद भी तंत्र के ऐसे पतन का साक्षी बनना बेहद शर्मनाक है। माडल–अभिनेत्री त्विषा शर्मा की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत ने कई सवाल खड़े किए हैं। जैसे 12 मई को मौत होने के बाद भी 15 मई तक पुलिस ने प्राथमिकी तक दर्ज नहीं की। त्विषा की सास गिरिबाला सिंह सेवानिवृत्त जज तो पति समर्थ सिंह अधिवक्ता हैं। जहां एफआइआर में देरी हुई, वहीं गिरिबाला सिंह को न केवल सहजता से अग्रिम जमानत मिल गई, बल्कि घटना स्थल पर बेरोकटोक जाने की छूट भी मिली। यह अच्छा है कि हाई कोर्ट से उनकी यह जमानत खारिज हो गई और सीबीआइ ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया है, पर उससे पहले उनके पास इतनी गुंजाइश रही कि वे तमाम साक्ष्यों को अपनी सुविधा से देख सकें। उन्होंने पुलिस और न्यायिक तंत्र से जुड़े विभिन्न पदाधिकारियों को फोन काल भी किए, जिनमें लोकायुक्त, डीजी रैंक के पुलिस अधिकारी और एक जिला जज भी शामिल रहे। शायद ही कोई ऐसा दूसरा मामला ध्यान में आए, जहां न्यायाधीश ने मामले से जुड़े किसी संभावित आरोपित को ही साक्ष्यों से छेड़छाड़ की ऐसी खुली छूट प्रदान की हो। समर्थ सिंह भी करीब दस दिनों तक भूमिगत रहे। जब मीडिया में इस मुद्दे ने तूल पकड़ा तो मुख्यमंत्री त्विषा के परिवार से मिलने पर सहमत हुए और मामले की जांच सीबीआइ को सौंप दी गई। हालांकि यह सब 25 मई तक संभव हो सका। राज्य दूसरे पोस्टमार्टम के लिए भी तैयार तो हुआ, लेकिन मौत के 12 दिन बाद 24 मई को। इस पूरे मामले में पुलिस की ढिलाई और सास को मिली अग्रिम जमानत ऐसे किसी भी व्यक्ति के अंतरात्मा को झकझोर सकती है, जो ससुराल में महिलाओं के प्रति क्रूरता और दहेज निषेध कानून की बारीकियों से परिचित हो। भारतीय साक्ष्य अधिनियम यानी बीएसए की धारा 117 (जो पहले भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 113 ए) के तहत स्पष्ट प्रविधान है कि, श्विवाह के सात वर्ष के अंदर किसी महिला की आत्महत्या के संबंध में जब यह सवाल उठे कि क्या उसकी आत्महत्या उसके पति या उसके किसी रिश्तेदार द्वारा उकसावे का परिणाम रही या उसके प्रति क्रूरता बरती गई तो न्यायालय सभी परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए यह मानकर चल सकता है कि आत्महत्या उसके पति या पति के किसी रिश्तेदार द्वारा उकसावे का नतीजा रही।़ भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 118 तो और भी स्पष्ट एवं प्रभावी है। इसके अनुसार, श्जब सवाल यह हो कि क्या किसी व्यक्ति ने किसी महिला की दहेज के चलते हत्या की है और अपनी मृत्यु से ठीक पहले ऐसी महिला को उस व्यक्ति द्वारा दहेज की किसी भी मांग के लिए या उसके संबंध में क्रूरता या उत्पीड़न का शिकार बनाया गया था, तो न्यायालय यह मानने के लिए बाध्य होगा कि वही व्यक्ति दहेज के कारण हुई हत्या का जिम्मेदार है। देश में दहेज हत्या के बढ़ते मामलों के कारण ही संसद ने कानून में संशोधन किया और 1980 के दशक में इसे और अधिक सख्त बनाया। नव–प्रवर्तित भारतीय न्याय संहिता की धारा 85 के अंतर्गत भी पति या पति के रिश्तेदार के लिए तीन साल तक की कारावास का प्रविधान है, जो किसी महिला को अपनी क्रूरता का शिकार बनाता है। इसी क्रम में धारा 86 श्क्रूरताश् को परिभाषित करती है। इसके अनुसार श्क्रूरताश् से तात्पर्य जानबूझकर किए गए ऐसे किसी भी आचरण से है, जिसके चलते (क) महिला को आत्महत्या करने के लिए उकसाने की आशंका हो या महिला के जीवन, अंग या स्वास्थ्य (चाहे मानसिक हो या शारीरिक) को गंभीर क्षति या खतरा पहुंचने का जोखिम हो, (ख) इसमें दहेज के लिए महिला का उत्पीड़न किया जाना शामिल हो।

# भाषा को लेकर नई पहल

अब इस सूत्र में संस्कृत कहां फिट हो सकती थी। धीरे धीरे वह घर से बाहर होते होते सड़क पार हो गई। पंजाब का उदाहरण लिया जा सकता है। स्कूलों में संस्कृत अध्यापकों के लगभग सारे पद समाप्त हो गए। संस्कृत के सरकारी कालेज दम तोड़ गए। कपूरथला व नाभा का सरकारी संस्कृत कालेज जो वहां के महाराजाओं ने खोला था, बंद हो गया। गुरुवाणी के गहन अर्थों को समझने के लिए संस्कृत का अध्ययन अनिवार्य है। आज से लगभग अढ़ाई सौ साल पहले दशम गुरु श्री गोविंद सिंह जी इसे समझ गए थे और उन्होंने अपने पांच शिष्यों को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भी भेजा था। भाषा को लेकर देश में अंग्रेजों के आने और चले जाने से ही बहस चल रही है। अंग्रेजों से पहले जब तुर्कों, मुगलों का राज था तब राज की भाषा फारसी हो गई थी। जो मौके का फायदा उठाना जानते थे वे फारसी की ओर खिसक लिए और राजा के कृपा पात्र भी हुए। लेकिन देश की आम जनता अपनी देसी भाषाओं को इस संकट काल में संभाले रही। यह अलग बात है कि उनके इस राष्ट्रीय प्रयास को दरबारियों ने यह कह कर पारिभाषित किया कि ये लोग जमाने से पिछड़ गए हैं। जब अंग्रेज आए तो फारसी का स्थान अंग्रेजी ने ले लिया। प्रजा फिर अपनी देसी भाषाओं को संभालती रही। इस बार ज्यादा जोर से प्रजा को जमाने से पिछड़ी हुई ही नहीं बल्कि असभ्य, अशिक्षित भी कहा गया। उनकी भाषाओं को वर्नाक्युलर यानी गंवारु भी कहा गया। दरबार की भाषा बदल चुकी थी। इस बार फिर तेज तर्रार छलांग लगा कर राजा की भाषा सीख कर राजा के हमसफर हो गए। तब अंग्रेज भी चले गए। अब जनता को लगा उनको अपनी भाषा में लिखने, बोलने और पढ़ने का अवसर मिलेगा, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इसका मुख्य कारण यह था कि अंग्रेज जाते हुए सत्ता अपने भारतीय हमसफरों को ही सौंप कर गए थे। इतना ही नहीं जब शिक्षा संस्थानों में भारतीय भाषाएं प्रवेश करने लगीं तो हल्ला मचाया गया कि ये भाषाएं लादी जा रही हैं। जमाना बहुभाषी लोगों का आ गया था, लेकिन तमिलनाडु तमिल के सिवा और कोई भारतीय भाषा पढ़ाने को तैयार नहीं था। अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति से भाषाओं को लेकर एक नया द्वार खुला है। कोई भी भाषा थोपने का बनावटी राग समाप्त होने के कगार पर है। इसमें कोई भी भाषा अनिवार्य नहीं है। हर छात्र को अपनी रुचि के हिसाब से तीन भाषाएं सीखना होंगी। इनमें से कोई भी दो भारतीय भाषाएं और कोई भी एक विदेशी भाषा। कहा जा रहा है कि सारी दुनिया अब अंतरराष्ट्रीय गांव बन गई है, इसलिए विदेशी भाषाएं सीखना जरूरी है। इस तर्क में दम है। लेकिन इससे पहले विदेशी भाषा के नाम पर केवल अंग्रेजी थोपी जा रही थी। किसी दूसरी विदेशी भाषा का विकल्प ही नहीं था। अब यह विकल्प प्रदान कर दिया गया है। विदेशी भाषा से अभिप्राय केवल यूरोप की भाषाएं ही नहीं हैं। एशिया की भाषाएं भी हैं। इसलिए विदेशी भाषा के खाते से चीनी, जापानी, थाई इत्यादि भाषाएं भी ली जा सकती हैं। इसी प्रकार दो भारतीय भाषाओं का मामला है। पहले जब कभी हिंदी की बात आती थी

तो हल्ला मचता था कि हिंदी थोपी जा रही है। लेकिन अब हिंदी थोपने का राजनीतिक राग बंद हो गया है। छात्र को कोई भी दो भारतीय भाषाएं चुनना है। कोई भी भारतीय भाषा अनिवार्य नहीं है। उदाहरण के लिए तमिलनाडु को ही लें। वहां दो भारतीय भाषाओं में छात्र एक भाषा तमिल चुन सकता है और यदि हिंदी नहीं पढ़ना चाहता तो दूसरी भाषा मलयालम या तेलुगु भी चुन सकता है। बस शर्त इतनी ही है कि दो भारतीय भाषाएं पढ़नी ही पड़ेंगी। यह एक प्रकार से त्रिभाषा सूत्र ही है जो देश में लाल बहादुर शास्त्री के कार्यकाल से ही लागू है। अब नया सूत्र भी त्रिभाषा सूत्र ही है। दोनों में क्या अंतर है? क्या पुरानी शराब को ही नई बोतल में परोसा जा रहा है? ऊपर से देखने पर समानता लगती है, लेकिन दोनों सूत्रों का आपस में दूर–दूर तक कोई संबंध नहीं है। पुराने त्रिभाषा सूत्र में तीन भाषाएं सरकार द्वारा ही निश्चित कर दी गई थीं। इसलिए छात्र के पास विकल्प नहीं था। ये भाषाएं राज्य सरकार द्वारा थोपी गई थीं। ये तीन अनिवार्य भाषाएं मातृभाषा, हिंदी और अंग्रेजी थीं। मातृभाषा को तो थोपना नहीं कहा जा सकता और न ही वह थोपी गई भाषा होती है। लेकिन हिंदी और अंग्रेजी थोपी गई भाषाएं कही जाती थीं। अंग्रेजी क्योंकि अंग्रेजों के राज में भी और उनके चले जाने के बाद भी राजा की भाषा थी और रही, इसलिए उसको राज दरबार में घुसने का रास्ता स्वीकार किया गया। क्योंकि देश में लोकतंत्र है, इसलिए राज दरबार में घुसने के दो रास्ते हुए। पहला चुनाव के घुमावदार रास्ते से और दूसरा अंग्रेजी के माध्यम से। लालू चुनाव के रास्ते से राज दरबार में दाखिल हुए और बिहार का दूसरा लडका अंग्रेजी की डोरी पकड़ कर लोक सेवा आयोग की डगर से। लेकिन यहीं पर पेंच है। चुनाव के रास्ते आने जाने वाले लोगों का राज दरबार अस्थायी है और लोक सेवा आयोग के रास्ते से आने वालों का राज दरबार स्थायी है। इसलिए किसी की हिम्मत नहीं है कि वह कहे कि अंग्रेजी थोपी जा रही है। अब बची हिंदी। गरीब की जोरु सबकी भाभी। इसलिए देश में हिंदी थोपी जा रही है, यह राग राजनीति के लोग समय–असमय बजाते रहते थे। लेकिन इस नए त्रिभाषा सूत्र में अब बेसुरा राग समाप्त कर दिया है। अब भाषा का चयन उपयोगिता के हिसाब से होगा और इसका निर्धारण विद्यार्थी स्वयं या उसके माता–पिता करेंगे। भाषाओं का यह मामला संविधान में लिखी गई भाषाओं तक ही सीमित नहीं है। भारत की बहुत सी भाषाएं जिनके बोलने वालों की संख्या कम है, इस सूची में दर्ज नहीं हैं। लेकिन जिन छात्रों की मातृभाषा, ऐसी भाषाएं हैं, वे अपनी इन मातृभाषाओं को भी नई व्यवस्था में पढ़ सकते हैं। उदाहरण के लिए मेघालय के एक हिस्से की भाषा खारसी है। यदि वहां के छात्र चाहें तो उसे भी भारतीय भाषाओं के खाते में पढ़ सकते हैं। इससे अनेक ऐसी भाषाएं जो हमारी शिक्षा व्यवस्था से बाहर रखी गई थीं, उन्हें भी उनका उचित स्थान मिल सका है। हिमाचल का ही उदाहरण लें। अब किन्नौर और लाहुल स्पीति के छात्र भोटी भाषा भी पढ़ सकते हैं।

# कर्नाटक में परिवर्तन

आखिरकार कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धरमैया ने त्यागपत्र दे दिया और उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार के उनकी जगह आसीन होने का रास्ता साफ हो गया। कर्नाटक में नेतृत्व परिवर्तन की चर्चा लंबे समय से हो रही थी और इसे लेकर खींचतान भी जारी थी, लेकिन कुछ तय नहीं हो पा रहा था। शिवकुमार का दावा था कि 2023 में सरकार गठन के समय सिद्धरमैया और उनके बीच ढाई–ढाई वर्ष तक सत्ता संभालने की सहमति बनी थी, पर कांग्रेस नेतृत्व ने इसकी पुष्टि नहीं की। अब तीन वर्ष बाद नेतृत्व परिवर्तन होना यह बताता है कि वास्तव में दोनों नेताओं में बारी–बारी से मुख्यमंत्री बनने का समझौता हुआ था और उससे कांग्रेस आलाकमान भी अवगत था। यदि ऐसा था तो फिर छह माह की देरी क्यों हुई? यह प्रश्न कांग्रेस नेतृत्व और विशेष रूप से राहुल गांधी की विफलता को दर्शाता है। इसलिए और भी, क्योंकि कहा जा रहा है कि नेतृत्व परिवर्तन तब सुनिश्चित हो पाया, जब प्रियंका गांधी ने हस्तक्षेप किया। यदि यह सच है तो यह पुराना सवाल फिर से उठेगा कि आखिर राहुल गांधी समय पर फैसला क्यों नहीं ले पाते? ध्यान रहे कि कांग्रेस अध्यक्ष भले ही मल्लिकार्जुन खरगे हों, लेकिन पार्टी के बड़े फैसले राहुल गांधी ही लेते हैं। त्यागपत्र देने को तैयार हुए सिद्धरमैया ने यह तो माना कि आलाकमान ने जैसा कहा, वैसा किया, पर वे राज्यसभा आने को तैयार नहीं। एक तरह से उन्होंने कांग्रेस नेतृत्व को यह संदेश दिया कि वे संतुष्ट नहीं हैं और अपने हिसाब से राज्य की ही राजनीति करेंगे। हालांकि उनके त्यागपत्र देने पर शिवकुमार ने पैर छूकर उनका आशीर्वाद लिया, लेकिन यह कहना बहुत कठिन है कि दोनों के रिश्ते सामान्य बने रहेंगे और कर्नाटक कांग्रेस में गुटबाजी को बढ़ावा नहीं मिलेगा। इसकी अनदेखी न की जाए कि इसके पहले बारी–बारी से नेतृत्व करने को लेकर राजस्थान और छत्तीसगढ़ में इसी तरह की खींचतान हुई थी। राजस्थान में अशोक गहलोत और सचिन पायलट के बीच ढाई–ढाई साल तक सत्ता संभालने को लेकर तनातनी जारी रही तो छत्तीसगढ़ में भूपेश बघेल और टीएस सिंह देव के बीच।



# गोरखपुर में लोगों को आकर्षित कर रहा धनुषाकार गर्डर वाला नकहा ओवरब्रिज

धनुषाकार गर्डर वाला नकहा ओवरब्रिज लोगों को आकर्षित कर रहा है। सोनौली हाइवे पर लाखों लोगों का आवागमन सुगम हुआ। ओवरब्रिज खुलने से जाम और दुर्घटनाओं से मिली मुक्ति।

संवाददाता, गोरखपुर। धनुषाकार गर्डर वाला नकहा ओवरब्रिज लोगों को आकर्षित कर रहा है। आने-जाने वाले लोगों की नजरें बरबस धनुषाकार पर उठ जा रही हैं। आखें उसकी बनावट पर ठिठक जा रही हैं। रात के समय का दृश्य और मनमोहक हो जा रहा। नकहा ओवरब्रिज का निर्माण कार्य पूरा होते ही लोगों के लिए दोनों लेन खोल दिए गए हैं। सोनौली हाइवे के बरगदवां तिराहा से फर्टिलाइजर और स्पोर्ट्स कालेज आवागमन के लिए इसके साथ ही लाखों लोगों का आवागमन सुगम हो गया है। लोग अब समय से गंतव्य पर पहुंचने लगे हैं। रेलवे प्रशासन के



अनुसार ओवरब्रिज पर स्टील के गर्डर लगाने के कार्य पूरे कर लिए गए हैं। 15 मई को ही कार्य पूरा कर ब्लाक समाप्त कर दिया गया। इस रोड ओवर ब्रिज के रेलवे हिस्से में दो अलग-अलग कैरिज वे शामिल हैं। ओवरब्रिज पर 760 मीट्रिक टन वजन के 72 मीटर लंबे धनुष आकार स्टील गर्डर स्थापित की गई है। प्रत्येक में एक 72 मीटर लंबा धनुष

आकार स्टील गर्डर स्पैन और एक 36 मीटर कंपोजिट स्टील गर्डर स्पैन लगाए गए हैं। ओवरब्रिज के खुल जाने से लोगों को जाम से मुक्ति मिल गई है। समपार फाटक पर 24 घंटे जाम की स्थिति बनी रहती थी। आए दिन दुर्घटनाएं होती रहती थी। पूर्वोत्तर रेलवे में समपार फाटकों को युद्धस्तर पर बंद किया जा रहा है। फाटकों पर आरओबी (रोड ओवरब्रिज) और यूआरबी (अंडर रोडब्रिज) बनाए जा रहे हैं। पिछले पांच वर्ष में लगभग 450 समपार फाटक बंद किए जा चुके हैं। इन वर्षों में समपार फाटकों पर एक भी दुर्घटना नहीं हुई है। दरअसल, समपार फाटक आए दिन क्षतिग्रस्त

होते रहते हैं। तेज गति वाहन क्रासिंग को तोड़ देते हैं तो अक्सर भारी वाहन क्रासिंग पर पहुंचकर बंद हो जाते हैं। ट्रेनों का संचालन प्रभावित तो होता ही है, फाटक से होकर आवागमन करने वाले लोग भी परेशान होते हैं। गोरखपुर-आनंद नगर रेल खंड पर समपार संख्या पांच ए के स्थान पर बना रोड ओवर ब्रिज एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। परियोजना के पूरा होने से सड़क और रेल यातायात सुरक्षित और सुगम हो गया है। रेलवे का यह आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर की ओर बढ़ता एक और मजबूत कदम है।

— सुमित कुमार, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी— पूर्वोत्तर रेलवे

## गोरखपुर में सड़क-पुल पर घूम रहीं गाय-भैंस

संवाददाता, गोरखपुर। शहर की सड़कों पर डेयरी संचालकों की गाय और भैंसों का आतंक लगातार बढ़ता जा रहा है, लेकिन नगर निगम की कार्रवाई केवल कागजी साबित हो रही है। हालात इतने बदतर हो चुके हैं कि वीआइपी इलाकों से लेकर मुख्य बाजारों और प्रमुख सड़कों तक मवेशियों का कब्जा दिखाई देता है। चौकाने वाला नजारा तारामंडल इलाके में देखने को मिला, जहां हाल ही में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा उद्घाटित ओवरब्रिज पर से भैंसों का बड़ा झुंड बेखौफ होकर गुजरता नजर आया। इसके अलावा डीएम आवास के सामने से भैंसों का झुंड गुजरता हुआ अक्सर दिखाई दे देता है। यह दृश्य न केवल नगर निगम की कार्यशैली पर सवाल खड़े करता है, बल्कि शहर की यातायात व्यवस्था और नागरिकों की सुरक्षा पर भी गंभीर चिंता पैदा करता है। शहर में आए दिन सड़कों के बीचों-बीच बैठी गायें और झुंड में घूमती भैंसें दुर्घटनाओं का कारण बन रही हैं। कई बार बाइक सवार और राहगीर इन मवेशियों की वजह से हादसों का शिकार हो चुके हैं, लेकिन नगर निगम की ओर से कोई स्थायी समाधान नहीं निकाला जा रहा।

## गोरखपुर में आग की लपटों में घिरे डंपर से आ रही चीखें सुन सहमे लोग

गोरखपुर फोरलेन पर डंपर-ट्रक की भीषण टक्कर हुई। हादसे के बाद दोनों वाहन आग के गोले में बदले। डंपर चालक-खलासी जिंदा जले, केवल कंकाल बचे।

संवाददाता, गोरखपुर। हादसे के बाद लखनऊ फोरलेन पर दृश्य इतना भयावह था कि जिसने भी देखा, उसकी रूह कांप उठी। रांग साइड आया डंपर टक्कर के बाद आग का गोला बन गया। कुछ ही मिनट में ट्रक भी धू-धू कर जलने लगा। हादसे की जानकारी होने पर ग्रामीण व राहगीर मौके पर पहुंचे। लेकिन आग इतनी भीषण थी कि डंपर के अंदर फंसे चालक और खलासी को बचाने की कोई हिम्मत नहीं जुटा सका। सुबह करीब पांच बजे तेज धमाके जैसी आवाज सुनकर अजवनिया गांव और आसपास के लोग घरों से बाहर निकले। फोरलेन की तरफ पहुंचे तो देखा कि सड़क किनारे पलटा ट्रक और डंपर आग की लपटों में घिरे हैं। आसमान में दूर तक काला धुआं उठ रहा था। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि डंपर का अगला हिस्सा पूरी तरह पिचक गया। चालक सत्येंद्र और खलासी शिवा पंडित



केबिन में फंस गए। हादसे के कुछ ही देर में आग ने विकराल रूप ले लिया इसकी चपेट में मक्का लदा ट्रक भी आ गया। ग्रामीणों ने बताया कि डंपर के अंदर से मदद के लिए चीखने की आवाजें आ रही थीं। कुछ लोग हिम्मत जुटाकर गाड़ी के पास पहुंचे भी, लेकिन आग की तेज लपटों और धुएं के कारण पीछे हटना पड़ा। लोगों ने पानी और मिट्टी डालकर आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन आग लगातार फैलती चली गई। सूचना मिलने पर रामगढ़ताल थाना पुलिस और फायर ब्रिगेड की टीम मौके पर पहुंची। दमकल की पांच गाड़ियां आग बुझाने में जुट गईं। करीब दो घंटे तक फोरलेन आग के मैदान में तब्दील रहा।

दोनों तरफ वाहनों की लंबी कतार लग गई। लोग दूर खड़े होकर जलते ट्रक व डंपर को देख रहे थे। जब आग पर काबू पाया गया और दमकल कर्मी ट्रक के केबिन तक पहुंचे तो डंपर के केबिन का दृश्य देखकर सन्न रह गए। चालक और खलासी पूरी तरह जल चुके थे। उनके शरीर का केवल कंकाल बचा था। मौके पर मौजूद कई लोगों की आंखें यह दृश्य देखकर भर आईं। डंपर चालक के स्वजन हादसे की जानकारी मिलते ही बस्ती से गोरखपुर पहुंचे, जिसके बाद पोस्टमार्टम कराया गया। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक शव इतनी बुरी तरह जल चुके थे कि पहचान की पुष्टि के लिए डीएनए जांच हेतु नमूना भी लिया गया। वहीं खलासी शिवा के स्वजन फतेहपुर से देर शाम तक रामगढ़ताल थाने पहुंचे, जिसके कारण उसका पोस्टमार्टम नहीं हो सका। अधिकारियों का कहना है कि डीएनए जांच से पूरी स्थिति स्पष्ट होगी।

## गोरखपुर यांत्रिक कारखाने में जूनियर इंजीनियर चयन की लिखित परीक्षा निरस्त, सामने आई यह वजह

संवाददाता, गोरखपुर। यांत्रिक कारखाने में लिमिटेड डिपार्टमेंटल कंपेटिटिव इग्जामिनेशन (एलडीसीई) के तहत जूनियर इंजीनियर चयन के लिए 28 दिसंबर 2025 को आयोजित लिखित परीक्षा निरस्त कर दी गई है। कारखाना के वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी ने 26 मई को पत्र लिखकर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश जारी कर दिया है। वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी का कहना है कि यांत्रिक कारखाना, गोरखपुर की रिक्तियों के अनुसार आयोजित जूनियर इंजीनियरधैमेकैनिकल वर्कशाप लेवल 6 की चयन लिखित परीक्षा को सक्षम अधिकारी द्वारा निरस्त कर दिया गया है। अग्रिम आदेश एवं आगामी परीक्षा की तिथि के संबंध में मुख्यालय से निर्देश प्राप्त होने पर सूचित किया जाएगा।

एलडीसीई के तहत आयोजित विभागीय पदोन्नति परीक्षा नियमानुसार नहीं हुई थी। परीक्षा के बाद परीक्षार्थियों ने परीक्षा की शुचिता पर सवाल खड़ा करते हुए विरोध जताया था। उनका आरोप था कि परीक्षा में नियमानुसार राजभाषा से संबंधित दस प्रतिशत सवाल नहीं पूछे गए थे। सभी प्रश्न दो भाषाओं में नहीं थे। दस से 12 सवाल सिर्फ अंग्रेजी में ही पूछे गए थे, जो अनियमितता की तरफ इशारा कर रहे थे। दैनिक जागरण ने भी परीक्षार्थियों की शिकायतों को प्रमुखता से उठाते हुए खबर प्रकाशित की थी। मामला प्रकाश में आने के बाद रेलवे प्रशासन ने जांच बैठा दी थी। परीक्षार्थियों की शिकायतें सही पाए जाने पर रेलवे प्रशासन ने परीक्षा को निरस्त कर दिया है। दरअसल, पूर्वोत्तर रेलवे में एलडीसीई के तहत

आयोजित विभागीय पदोन्नति परीक्षाओं पर लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं। रेलवे प्रशासन ने 26 फरवरी को एमएसटीसी गोरखपुर में आयोजित तकनीशियन ग्रेड थर्ड कार्पेंटर की लिखित परीक्षा सक्षम अधिकारी के अनुमोदन से निरस्त कर दिया है। उप मुख्य इंजीनियर कार्यालय ने पांच मई को उप मुख्य इंजीनियर गोरखपुर क्षेत्र का हवाला देते हुए परीक्षा निरस्तीकरण का दिशा-निर्देश जारी कर दी है। अभ्यर्थियों का आरोप था कि तकनीशियन ग्रेड थर्ड कार्पेंटर की एलडीसीई की लिखित परीक्षा दो वर्ष पहले हुबली में बने पेपर से ही आयोजित करा ली गई थी। परीक्षा के लगभग सभी सवाल (100 के करीब) के जवाब एक विकल्प में ही दिए गए थे। दैनिक जागरण ने इस प्रकरण को भी प्रमुखता से उठाते हुए प्रकाशित किया था।



लंबी लाइफ और कम लागत के लिए प्लास्टिक नोटों पर विचार



पेट्रोल का झंझट खत्म! 3 जून को आ रही है हीरो की सबसे सस्ती प्लेक्स-फ्यूल बाइक, नितिन गडकरी करेंगे लॉन्च



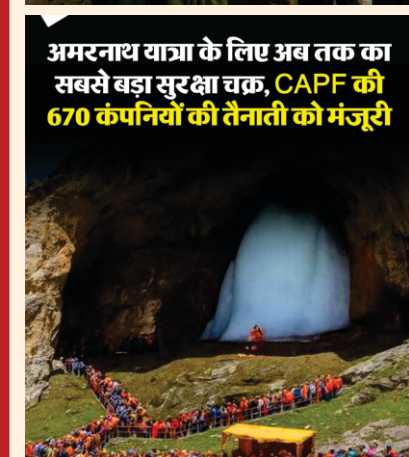
जापान ने दिया भारत को बड़ा झटका, 20 साल बाद फिर लगा दिया आम पर बैन, क्या है वजह?



जून में सिर्फ 90% बारिश का अनुमान यूपी-बिहार समेत 8 राज्यों में दूटेंगे गर्मी के सारे रिकॉर्ड



पुणे में जहरीली शराब का कहर 8 लोगों की मौत के बाद प्रशासन में मचा हड़कंप



अमरनाथ यात्रा के लिए अब तक का सबसे बड़ा सुरक्षा चक्र, CAPF की 670 कंपनियों की तैनाती को मंजूरी



## बिजली निगम का बड़ा कदम

**नौसड़ में बजेगा नया सबस्टेशन, लोड बंटेगा- 15 हजार घरों को फायदा**

गोरखपुर,संवाददाता। अधीक्षण अभियंता शहरी रणजीत चौधरी ने बताया कि बिजनेस प्लान 2026-27 के अंतर्गत नौसड़ उपकेंद्र निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। उन्होंने कहा कि उपकेंद्र बनने के बाद क्षेत्र की बिजली व्यवस्था पहले से अधिक मजबूत और विश्वसनीय होगी। महानगर के नौसड़ क्षेत्र में वर्षों से बनी बिजली समस्या अब जल्द दूर होने की उम्मीद है। बिजली निगम ने नौसड़ में नए उपकेंद्र के निर्माण की प्रक्रिया तेज कर दी है। बिजनेस प्लान 2026-27 के तहत प्रस्तावित इस उपकेंद्र के निर्माण के लिए जल्द ही एजेंसी तय कर कार्य शुरू कराया जाएगा। नया उपकेंद्र बनने से नौसड़ और आसपास के इलाकों में लगातार बढ़ रहे बिजली लोड का दबाव कम होगा। वर्तमान में ओवरलोडिंग और बार-बार फाल्ट होने के कारण उपभोक्ताओं को घंटों बिजली कटौती झेलनी पड़ती है। उपकेंद्र चालू होने के बाद बिजली आपूर्ति अधिक सुचारु और स्थिर हो सकेगी। नए उपकेंद्र से करीब 15 हजार घरों के उपभोक्ताओं को सीधा लाभ मिलेगा। लोड बंटने से ट्रिपिंग और फाल्ट की घटनाएं कम होंगी, जिससे लोगों को गर्मी के मौसम में बड़ी राहत मिलेगी। अधीक्षण अभियंता शहरी रणजीत चौधरी ने बताया कि बिजनेस प्लान 2026-27 के अंतर्गत नौसड़ उपकेंद्र निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

## सड़क हादसे में 2 की मौत

**ट्रक-डंपर में भीषण भिड़ंत, लगी आग- चालक और क्लीनर जिंदा जले**



गोरखपुर,संवाददाता। मक्का लदा ट्रक कुशीनगर से लखनऊ की ओर जा रहा था। इसी दौरान अजवनिया गांव के पास डस्ट लदा डंपर रॉग साइड से सामने आ गया। तेज रफ्तार में दोनों वाहनों की जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि ट्रक सड़क किनारे पलट गया और उसमें आग लग गई। कुछ ही देर में आग ने डंपर को भी अपनी चपेट में ले लिया। कुशीनगर-लखनऊ फोरलेन पर गुरुवार सुबह रामगढ़ताल क्षेत्र के अजवनिया गांव के पास ट्रक और डंपर की आमने-सामने टक्कर के बाद दोनों वाहनों में आग लग गई। हादसे में डंपर चालक और क्लीनर जिंदा जल गए, जबकि ट्रक चालक और खलासी किसी

तरह कूदकर जान बचाने में सफल रहे। सुबह करीब पांच बजे हुए हादसे के बाद हाईवे पर अफरातफरी मच गई और करीब पांच किलोमीटर लंबा जाम लग गया। सूचना पर पहुंची पुलिस और फायर ब्रिगेड ने दो घंटों की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। जानकारी के अनुसार, मक्का लदा ट्रक कुशीनगर से लखनऊ की ओर जा रहा था। इसी दौरान अजवनिया गांव के पास डस्ट लदा डंपर रॉग साइड से सामने आ गया। तेज रफ्तार में दोनों वाहनों की जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि ट्रक सड़क किनारे पलट गया और उसमें आग लग गई। कुछ ही देर में आग ने डंपर को भी अपनी चपेट में ले लिया। हादसे के

दौरान ट्रक का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। आग लगते ही उसमें फंसे चालक बस्ती स्थित थाना पुरानी के सत्येंद्र पुत्र रामकोमल और क्लीनर फतेहपुर के शिवा बाहर नहीं निकल सके और जिंदा जल गए। वहीं, डंपर चालक और खलासी गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद वाहन से कूदकर बाहर निकल आए। दोनों को एंबुलेंस से अस्पताल भेजा गया है। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक, टक्कर की आवाज दूर तक सुनाई दी। हादसे के बाद आसपास के ग्रामीण मौके पर पहुंच गए और पुलिस को सूचना दी। कुछ ही देर में पुलिस और फायर ब्रिगेड की पांच गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। दमकल कर्मियों ने करीब दो घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग बुझाई। आग शांत होने के बाद पुलिस और दमकल टीम ने डंपर के भीतर से चालक और क्लीनर के जले हुए अवशेष बाहर निकाले। दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस मृतकों की पहचान कराने का प्रयास कर रही है। हादसे के कारण फोरलेन पर लंबा जाम लग गया। दोनों तरफ वाहनों की कतारें लगने से राहगीरों को भारी परेशानी उठानी पड़ी। बाद में पुलिस ने क्रेन की मदद से जले हुए ट्रक और डंपर को सड़क से हटवाकर यातायात बहाल कराया।

## हादसे में घायलों को बचाने गया युवक...

**सरकारी बस ने रौंदा, मौत- घायल युवक ने भी अस्पताल में तोड़ा दम**

बस्ती,संवाददाता। बस्ती के मुंडेरवा क्षेत्र में बस्ती-कांटे मार्ग पर बुधवार सुबह हुए भीषण सड़क हादसे में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल है। पुरानी बस्ती के अगद और आदित्य की बाइक सड़क किनारे गिरे पेड़ से टकरा गई। उन्हें बचाने रुके सोनहा निवासी सूरज को तेज रफ्तार अज्ञात बस ने रौंद दिया। हादसे के बाद दोनों परिवारों में कोहराम मच गया है। क्षेत्र के बस्ती-कांटे मार्ग पर बनकसही गांव के पास बुधवार को हुए भीषण सड़क हादसे में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे के बाद क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई और परिजनों में कोहराम छा गया। बताया जा रहा कि एक बाइक पर सवार दो युवक पेड़ से टकरा गए। उन्हें बचाने पहुंचे दूसरे युवक को बस ने रौंद दिया। इसमें उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, दक्षिण दरवाजा थाना पुरानी बस्ती निवासी 22 वर्षीय अंगद और 21 वर्षीय आदित्य निषाद बुधवार की सुबह मोटरसाइकिल से गोरखपुर मछली लेने जा रहे थे। इसी दौरान बनकसही गांव के पास सड़क किनारे गिरे पेड़ से उनकी बाइक अनियंत्रित होकर टकरा गई। टक्कर इतनी तेज थी कि दोनों युवक सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक उसी समय बरात से लौट रहे सल्टौवा गोपालपुर थाना क्षेत्र के सोनहा निवासी 22 वर्षीय सूरज अपने साथियों के साथ वहां रुका और घायलों की मदद करने लगे।

## निक्कू, फिर इरफान, फिर शक्ति

**एक-एक कर घर पहुंचे शव**

**तीनों मां की चीख से दहला मोहल्ला**

गोरखपुर,संवाददाता। गोरखपुर के तुर्कमानपुर हांसूपुर मोहल्ले में बुधवार का दिन चीख-पुकार और मातम में बीता। राप्ती नदी में डूबे तीन किशोरों अंश उर्फ निक्कू, इरफान और शक्ति कुमार गौतम के शव एक के बाद एक घर लाए गए तो कोहराम मच गया। पोस्टमार्टम के बाद दोपहर करीब 3रू40 बजे अंश उर्फ निक्कू का शव घर पहुंचा। बेटे को देखते ही मां रेखा बेसुध होकर लिपट गई और रोते हुए बोलीं—मेरा बाबू मुझे छोड़कर कहां चला गया। तुर्कमानपुर के हांसूपुर मोहल्ले में बुधवार का दिन मातम और चीख-पुकार के बीच बीता। राप्ती नदी में डूबने से जान गंवाने वाले तीन किशोरों अंश उर्फ निक्कू, इरफान और शक्ति कुमार गौतम के शव जैसे ही मोहल्ले में लाए गए, पूरे इलाके में कोहराम मच गया। मांओं की चीखें और परिजनों का विलाप सुन हर आंख नम हो गई। देर रात तक मोहल्ले के किसी घर में चूल्हा नहीं जला। पोस्टमार्टम के बाद सबसे पहले दोपहर करीब 3रू40 बजे अंश उर्फ निक्कू का शव घर लाया



गया। बेटे का शव देखते ही मां रेखा बेसुध होकर उससे लिपट गई। वह बार-बार रोते हुए कहती रहीं— मेरा बाबू मुझे छोड़कर कहां चला गया। दादा रामदरश भी पोते का शव देख फफक पड़े। अंश की अर्थी उठते ही पूरे मोहल्ले की आंखें भर आईं। **इरफान का शव लाते ही गूंज उठी चीखें** करीब चार बजे इरफान का शव मोहल्ले में लाया गया तो लोग फिर चीख पड़े। मां सोना अपने इकलौते बेटे की लाश के पास बैठकर छाती पीटने लगीं और अपने भाग्य को कोसती रहीं। पिता फखरुद्दीन की आंखें मानो पथरा गई थीं। रिश्तेदार उन्हें संभालते नजर आए, लेकिन किसी के पास सांत्वना के शब्द नहीं थे।

## उपकेंद्र में पेड़ से बंधी मिली थी जेई की बाइक, मांगे थे कनेक्शन के 50 हजार रुपये- निर्लंबित

गोरखपुर,संवाददाता। अधीक्षण अभियंता ग्रामीण द्वितीय दीपक कुमार ने जेई को नोटिस देने के बाद इस पर जांच बैठाई थी। जांच रिपोर्ट के पूरा होने के बाद अधीक्षण अभियंता ग्रामीण द्वितीय दीपक कुमार ने बुधवार को पाली उपकेंद्र के जेई सुशील कुमार को निर्लंबित कर आदेश जारी कर दिया। पांच खंभे की बिजली लाइन बनाने के नाम पर 50 हजार रुपये लेने के आरोप में पाली उपकेंद्र के जेई सुशील कुमार गुप्ता को बुधवार देर शाम निर्लंबित कर दिया गया। उन्हें परीक्षण खंड द्वितीय से संबद्ध कर दिया गया।

यह कार्रवाई अधीक्षण अभियंता ग्रामीण द्वितीय दीपक कुमार ने की है। बताया जा रहा है कि जेई ने ईट भट्टा के लिए पांच खंभे की बिजली लाइन बनाने के नाम पर 50 हजार रुपये ले लिए। 12 मई को पाली उपकेंद्र परिसर में जेई की बाइक पेड़ से बांधने का वीडियो प्रसारित हुआ था। इसके बाद अधीक्षण अभियंता ग्रामीण द्वितीय दीपक कुमार ने जेई को नोटिस देने के बाद इस पर जांच बैठाई थी। जांच रिपोर्ट के पूरा होने के बाद अधीक्षण अभियंता ग्रामीण द्वितीय दीपक कुमार ने बुधवार को पाली उपकेंद्र के जेई सुशील कुमार को निर्लंबित कर आदेश जारी कर दिया।

## नदियों के किनारे है मौत का कुआं

**कड़्यों में तो लाश भी नहीं मिलती- 29 सितंबर को 4 डूबे, 3 अभी तक नहीं मिले**

देवरिया,संवाददाता। आसपास के लोगों का कहना है कि कहीं बालू खनन तो कहीं निर्माण कार्य के दौरान बने ये गड्ढे समय के साथ और खतरनाक हो चुके हैं। जहां कहीं नदी पर पुल या पीपा पुल लगा है, उसके आसपास ये गड्ढे और खतरनाक हैं। बताया जाता है कि पिलर बनाने के लिए नदी के पानी में जो घेरा बनता है, वहां गड्ढे बन जाते हैं। सरयू नदी के नर्वदेश्वर घाट, कटइलवा मुक्तिपथ, गौरा-जयनगर, निर्माणाधीन मोहन सेतु सहित आधा दर्जन घाटों पर किनारे ही मौत का कुआं है। लार के महाल मंझरिया इलाके में पीपा पुल लगाने के लिए नदी में बनाए गए गड्ढे अब जानलेवा हो चुके हैं। छोटी गंडक नदी के किनारे से कुछ ही दूर अंदर अचानक से नदी गहरी हो जाती है। इन घाटों पर आए दिन हादसे होते रहते हैं। छह महीने में अलग-अलग नदियों में आठ लोगों की डूबने से मौत हो चुकी है। सबसे अधिक हादसा बरहज में होता है। इन गड्ढों में डूबने पर कई बार तो शव भी नहीं मिलता। सरयू नदी में कटइलवा मुक्तिपथ, नर्वदेश्वर घाट, गौरा-जयनगर और निर्माणाधीन मोहन सेतु के पास नदी में अनगिनत गहरे गड्ढे बन गए हैं। आसपास के लोगों का कहना है कि कहीं बालू खनन तो कहीं निर्माण कार्य के दौरान बने ये गड्ढे समय के साथ और खतरनाक हो चुके हैं। जहां कहीं नदी पर पुल या पीपा पुल लगा है, उसके आसपास ये गड्ढे और खतरनाक हैं। बताया जाता है कि पिलर बनाने के लिए नदी के पानी में जो घेरा बनता है, वहां गड्ढे बन जाते हैं। गर्मी में तापमान बढ़ने के बाद नदी में नहाने वालों की संख्या बढ़ जाती है। वहीं दाह-संस्कार में आए लोग भी नदी में स्नान करते हैं। नदी घाट पर अनजान जगहों पर नहाने के दौरान लोग गहरे पानी में डूब जाते हैं।

**छह माह में पांच की जा चुकी है जान** बरहज। सरयू तट पर पिछले छह महीनों में पांच से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। इनमें दो का सुराग तक नहीं लग सका है। 29 सितंबर को दुर्गा प्रतिमा स्थापना के लिए कलश में जल भरने आए लहछुआं गांव के विवेक (16), रणजीत (20), चंद्रशेखर (16)



और गोरखपुर के चौरीचौरा के गांगुली (22) गहरे पानी में डूब गए थे। लोगों ने किसी तरह गांगुली को बचा लिया था। अन्य तीन साथी नदी में डूब गए थे। बीते नवंबर में नौकाटोला के स्वरामप्रीत सैनी की 10 वर्षीय पुत्री डूब गई थी। 10 दिन पहले ही दाह संस्कार में आए सुरौली थाना क्षेत्र के बढ़या बुजुर्ग गांव निवासी अंश चौहान स्नान के दौरान नदी में लापता हो गया था। उसका अब तक सुराग नहीं लग सका है। **बालू से ढके गड्ढे बन गए हैं दलदल** नदी के किनारे रहने वाले सर्वजीत निषाद ने बताया कि नदी में कई जगह गड्ढों के ऊपर बालू की परत है, जिस पर पैर पड़ते ही बालू हट जाता है। वहां जमीन दलदली हो जाती है। नाव चलाने वाले अपने बांस से ऐसे स्थान चिन्हित कर उससे बचते हुए निकल जाते हैं, लेकिन आम आदमी को पता नहीं चल पाता। वहां नहाने के दौरान पैर पड़ते ही आदमी का संतुलन बिगड़ जाता है और गहराई में फंसकर डूब जाता है। नदियों में अवैध बालू खनन से ऐसी स्थिति बनी है। **बेटे के खोने का दर्द आजीवन रहेगा** जयनगर निवासीनी अर्पित की मां इंद्रासनी देवी, अमन की मां संगीता देवी, लहछुआं निवासी रणजीत की मां दुर्गावती देवी, विवेक की मां होसिला देवी और चंद्रशेखर की मां शुद्धि देवी के लिए बेटों का नदी में नहाना आजीवन दर्द दे गया है। अर्पित की मां इंद्रासनी देवी का कहना है कि नदी में नहाने का जो दर्द मिला है, वह मेरा परिवार

आजीवन नहीं भूल पाएगा। बुधवार को इस घर में सांत्वना देने पहुंचीं आसपास की महिलाओं का कहना था कि कुछ भी हो जाए, बच्चों को नदी के किनारे नहीं जाने देना है। **संवेदनशील घाटों पर प्रशासन कराएगा निगरानी** गर्मी से राहत के लिए नदी में कूदने वालों की निगरानी अब तहसील प्रशासन करेगा। डीएम मधुसूदन हुल्गी ने बीते सोमवार को सोशल मीडिया में लाइव आकर घाटों की निगरानी कराने के निर्देश दिए थे। साथ ही, लोगों से अपील की थी कि नदी व तालाबों में नहाने से परहेज करें। इसके बाद आपदा विभाग की तरफ से भी तहसील प्रशासन को पत्र भेजकर कहा गया है कि नदी के ऐसे घाट जहां से लोगों का आवागमन हो रहा है, या जहां लोग धार्मिक क्रिया कलाप के लिए भी नहाते हैं, वहां अतिरिक्त सुरक्षा बरती जाए। सावधान करते बोर्ड लगाए जाएं। इसके अलावा जहां नाव से लोग आते-जाते हैं वहां सवारियों के लिए भी लाइफ जैकेट का इंतजाम किया जाए। नदी, तालाब व पोखरों में नहाने के दौरान डूबने की घटनाएं घिंताजनक है। लोगों से अपील है कि गहरे पानी में न जाएं। ग्राम प्रधान व संबंधित अफसर ऐसे स्थान जो संवेदनशील हैं, वहां चेतावनी बोर्ड लगवाएं, जिससे कि लोग संभावित खतरे से बच सकें। **मधुसूदन हुल्गी, डीएम**



# सीएम योगी ने पूर्व पीएम चौधरी चरण सिंह को किया याद बोले- कृषि व राजस्व के क्षेत्र में अनेक रिफॉर्म किए

लखनऊ, संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्व प्रधानमंत्री 'भारत रत्न' चौधरी चरण सिंह की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की और कृषि व राजस्व के क्षेत्र में अनेक रिफॉर्म किए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्व प्रधानमंत्री 'भारत रत्न' चौधरी चरण सिंह की पुण्यतिथि पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सीएम योगी ने विधान भवन स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्पांचन किया। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री चौधरी चरण सिंह को भारत मां का महान सपूत और किसानों का मसीहा बताया।

**चौधरी साहब को जाता है कृषि, राजस्व के क्षेत्र में अनेक रिफॉर्म का श्रेय**



मुख्यमंत्री ने कहा कि चौधरी चरण सिंह का जन्म 23 दिसंबर 1902 को उत्तर प्रदेश में हुआ था। वह देश के स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े थे। देश

में कृषि, राजस्व के क्षेत्र में तमाम रिफॉर्म का श्रेय उन्हें जाता है। उनका स्पष्ट मत था कि देश के विकास का रास्ता गांव, खेत व खलिहालों से होकर जाता है।

**सरकार की प्राथमिकता का हिस्सा होना चाहिए किसान**

मुख्यमंत्री ने कहा कि किसान विकास के एजेंडे और सरकार की प्राथमिकता का हिस्सा होना चाहिए। शासन की योजनाएं किसानों को ध्यान में रखकर तैयार की जानी चाहिए। चौधरी चरण सिंह द्वारा देशहित में किए गए कार्यों को ध्यान में रखते हुए उन्हें भारत रत्न की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

**किसानों के हित से जुड़े अनेक कार्यक्रम चला रही**

**उत्तर प्रदेश सरकार**

सीएम योगी ने कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार चौधरी चरण सिंह की स्मृतियों को जीवंत बनाए रखने के लिए किसानों के हित से जुड़े अनेक कार्यक्रम चला रही है। इसमें लखनऊ में चौधरी चरण सिंह सीड पार्क का निर्माण भी महत्वपूर्ण है। देश के प्रमुख राजनेता होने के साथ ही उन्होंने देश और समाज के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

29 मई 1987 को उनका देहावसान हुआ। इस दौरान कैबिनेट मंत्री स्वतंत्र देव सिंह, राज्यमंत्री केपी मलिक, महापौर सुषमा खर्कवाल, राज्यसभा सांसद ब्रजलाल, विधायक नीरज बोरा, अमरेश कुमार, विधान परिषद सदस्य लालजी प्रसाद निर्मल, रामचंद्र प्रधान, उमेश द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

## आजम परिवार को राहत



- पासपोर्ट केस में अब्दुल्ला आजम बरी
- पहले मिली थी सात साल की सजा
- एमपी-एमएलए कोर्ट के फैसले से राहत

**मुरादाबाद, संवाददाता।** रामपुर की एक अदालत ने दो पासपोर्ट मामले में सपा नेता आजम खां के बेटे अब्दुल्ला आजम को बरी कर दिया गया है। इसके साथ ही कोर्ट ने उन्हें जमानत भी दे दी। उधर, दो पैन कार्ड में सजा होने के कारण वह फिलहाल जेल से बाहर नहीं आ सकेंगे। दोनों पिता-पुत्र इन दिनों रामपुर की जेल में बंद हैं।

चर्चित दो पासपोर्ट मामले में सपा नेता अब्दुल्ला आजम को बड़ी राहत मिली है। एमपी-एमएलए सेशन कोर्ट ने शुक्रवार को उनकी अपील स्वीकार करते हुए निचली अदालत द्वारा सुनाई गई सात साल की सजा को रद्द कर दिया। कोर्ट ने इस मामले में उनकी जमानत भी मंजूर कर ली है। फिलहाल जेल से बाहर नहीं आ सकेंगे।

यह मामला वर्ष 2019 में दर्ज कराया गया था। शहर विधायक आकाश सक्सेना ने सिविल लाइंस थाने में रिपोर्ट दर्ज कराते हुए आरोप लगाया था कि अब्दुल्ला आजम ने दो अलग-अलग पासपोर्ट बनाए थे।

## गोरखपुर में पत्नी का उसके प्रेमी से कराया शादी

**पति ने पत्नी का प्रेमी से कराया विवाह। बाद में पति ने प्रेमी पर टांगी से हमला किया। हमले में तीन लोग गंभीर रूप से घायल।**

**संवाद सूत्र, भट्टहट, (गोरखपुर)।** बंगलुरु में पेंट पालिश का काम करने वाला पति जब घर लौटा, तो पता चला कि उसकी पत्नी का गांव के युवक से प्रेम प्रसंग चल रहा है। इसे लेकर गांव में पंचायत हुई, समझौते के बाद उसने पत्नी की शादी प्रेमी से करा दी। फिर पिता और भाई के साथ मिलकर प्रेमी युवक पर टांगी से हमला कर दिया। बचाव में आए स्वजन पर भी हमला कर दिया। इसमें तीन लोग घायल हो गए, जिसमें एक की हालत गंभीर बनी हुई है। बीआरडी मेडिकल कालेज के नेहरू अस्पताल में उनका उपचार चल रहा है। इधर, पीड़ित पक्ष की तहरीर पर पुलिस ने चार लोगों पर जानलेवा हमले का केस दर्ज कर तीन को गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ के बाद गुरुवार को तीनों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से जेल भेज दिया गया। यह मामला गुलरिहा थाना क्षेत्र के जंगल डुमरी नंबर दो स्थित संज्ञाई टोला का है। आरोपित अमरजीत की शादी 12 वर्ष पहले मंशा देवी से हुई थी। आरोप है कि पिछले एक वर्ष से मंशा देवी का गांव के ही सूरज से प्रेम प्रसंग चल रहा था। बंगलुरु से आने के बाद अमरजीत को पत्नी के प्रेम प्रसंग की जानकारी होने पर गांव में पंचायत कराई गई। पंचायत में हुए समझौते के आधार पर दस दिन पहले आरोपित ने अपनी पत्नी मंशा देवी की शादी सूरज से करा दी। हालांकि पत्नी की दूसरी शादी होने से



वह नाराज चल रहा था। बुधवार रात करीब 10 बजे अमरजीत अपने भाई अनिल और पिता छोटकन के साथ घात लगाकर बैठ गए और सूरज का इंतजार करने लगे। आरोप है कि सूरज जैसे ही वहां पहुंचा तीनों घेरकर मारपीट शुरू कर दी। सूरज के स्वजन बचाने पहुंचे तो अमरजीत ने टांगी से हमला कर दिया। हमले में रामरतन, सूरज और श्रवण के सिर में गंभीर चोटें आईं और तीनों लहलुहान होकर जमीन पर गिर पड़े। ग्रामीणों ने मौके पर पहुंचकर किसी तरह बीच-बचाव किया और पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को बीआरडी मेडिकल कालेज भिजवाया। डॉक्टरों के अनुसार, रामरतन की हालत गंभीर बनी हुई है। सीओ गोरखनाथ रवि सिंह ने बताया कि तहरीर के आधार पर पुलिस ने अमरजीत, छोटकन, अनिल और वृंदावती देवी को विरुद्ध केस दर्ज किया। इसमें अमरजीत, उसकी मां और छोटेला को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है। फरार चल रहे एक आरोपित की तलाश चल रही है।

## हमीरपुर पुल हादसा-पिलर का टूटना खड़े कर रहा गुणवत्ता पर सवाल

**हमीरपुर में बेतवा नदी पर निर्माणाधीन पुल का पिलर टूटने से स्लैब ढहने से छह की मौत का मामला सेतु निगम के प्रबंध निदेशक का बयान- जांच के लिए कमेटी गठित, दोषी इंजीनियर का होगा निलंबन**

**संवाददाता, हमीरपुर।** यूपी के हमीरपुर में पुल गिरने के मामले ने हर किसी को झकझोर कर रख दिया है। पिलर टूटने से अब पूरे पुल की निर्माण गुणवत्ता और सरकारी निगरानी पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। हादसे में छह लोगों की मौत के बाद जिम्मेदारों पर कार्रवाई की मांग तेज हो गई है। बेतवा नदी पर मोराकांदर परसनी से नैठी व कंडौर गांव के बीच निर्माणाधीन 700.90 मीटर लंबे व साढ़े सात मीटर चौड़ाई वाले पुल का पांचवां पिलर गुरुवार रात एक बजे गिरकर तीन टुकड़ों में बंट गया। इससे उसके ऊपर टिकी स्लैब ढह गई। मलबे में दबकर छह मजदूरों की मौत हो गई। तीन लोग पिलर के पास फंसने से मलबे में नहीं दबे व बचा लिए गए। मजदूरों ने बताया कि पांचवां पिलर देर रात अचानक टूटा जिससे पूरा स्लैब गिर गया। वहीं आसपास के गांव तक स्लैब गिरने की तेज आवाज सुनाई दी।

**कानपुर की कंपनी बना रही पुल**

92 करोड़ रुपये से पुल निर्माण का काम कानपुर की द सेल्टर कंपनी करा रही थी। गर्मी के कारण रात आठ बजे से सुबह छह बजे तक काम किया जा रहा था। मौसम की खराबी के अलर्ट के बावजूद ठेकेदार सभी से रात में काम करा रहा था।

**राज्यसभा सदस्य के प्रयास से स्वीकृत हुआ था पुल**

राज्यसभा सदस्य बाबूराम निषाद के प्रयास



से स्वीकृत इस पुल का निर्माण उनके गांव मोराकांदर परसनी के पास से मई, 2024 में शुरू कराया गया था। मार्च, 2026 में इसे पूरा किया जाना था, लेकिन काम अधूरा था।

**सेतु निगम के विशेषज्ञ कर रहे जांच**

राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) की दो टीमों मौके पर राहत व बचाव कार्य कर रही हैं। डीएम अभिषेक गोयल ने बताया कि सभी छह शव पोस्टमार्टम हाउस लाए जा चुके हैं। मलबा हटाया जा रहा है। इसके बाद स्थिति और स्पष्ट होगी। सेतु

निगम के इंजीनियर व तकनीकी विशेषज्ञ जांच कर रहे हैं। जांच में सभी तथ्य सामने आएंगे।

**दोषी इंजीनियर किए जा रहे निलंबित : सेतु निगम**

उत्तर प्रदेश सेतु निगम के प्रबंध निदेशक धर्मवीर सिंह ने बताया कि हमीरपुर में पुल हादसे की जांच के लिए कमेटी गठित की गई है। दोषी इंजीनियरों के खिलाफ निलंबन की कार्रवाई की जा रही है। सुरक्षा व गुणवत्ता के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए गए हैं। जांच रिपोर्ट के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

## गोरखपुर में धार्मिक और पर्यटन स्थलों पर बनेंगे क्लीन स्ट्रीट फूड हब

**गोरखपुर, संवाददाता।** धार्मिक और पर्यटन पहचान को नई दिशा देने के लिए शहर में जल्द ही आधुनिक 'क्लीन स्ट्रीट फूड हब' विकसित किए जाएंगे। केंद्र सरकार की पीएम स्वनिधि योजना के तहत शुरू की गई इस महत्वाकांक्षी पहल के लिए नगर निगम ने तैयारियां तेज कर दी हैं और उपयुक्त भूमि की तलाश शुरू कर दी गई है। योजना के तहत नगर निगम को करीब चार करोड़ रुपये की धनराशि मिलने की संभावना है। केंद्र सरकार के आवासन एवं शहरी कार्य मंत्रालय की इस योजना का उद्देश्य धार्मिक, ऐतिहासिक और क्षेत्रीय पहचान

वाले शहरों में स्ट्रीट फूड को स्वच्छ, सुरक्षित और व्यवस्थित स्वरूप देना है। इसके जरिए स्थानीय व्यंजनों को बढ़ावा देने के साथ पर्यटन और रोजगार को भी नई गति मिलेगी। योजना के तहत रेहड़ी-पट्टरी दुकानदारों को आधुनिक सुविधाओं से युक्त एकीकृत फूड हब उपलब्ध कराया जाएगा, जहां स्वच्छता, पेयजल, बैठने की व्यवस्था, कचरा निस्तारण और प्रकाश जैसी सुविधाएं विकसित की जाएंगी।

**गोरखपुर समेत प्रदेश के कई नगर निगमों को किया गया शामिल**  
गोरखपुर सहित प्रदेश के कई बड़े शहरों

को पहले चरण में इस योजना के लिए चुना गया है। इनमें आगरा, अलीगढ़, अयोध्या, कानपुर, लखनऊ, मथुरा, मेरठ, प्रयागराज और वाराणसी भी शामिल हैं। राज्य नगरीय विकास अभिकरण (सूडा) ने सभी नगर निगमों और नगर पालिका परिषदों से निर्धारित प्रारूप पर प्रस्ताव मांगे हैं। योजना के तहत स्ट्रीट फूड विक्रेताओं को भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) द्वारा प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। प्रशिक्षण में भोजन तैयार करने, परोसने, साफ-सफाई बनाए रखने और खाद्य सुरक्षा मानकों का पालन करने के

तौर-तरीके सिखाए जाएंगे। इससे न केवल खाद्य गुणवत्ता बेहतर होगी, बल्कि ग्राहकों का भरोसा भी बढ़ेगा।

**विशेषज्ञ फूड हब विकसित करने में तकनीकी सहयोग**  
स्ट्रीट फूड हब विकसित करने के लिए तकनीकी और वास्तु सहयोग भी लिया जाएगा। भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार योजना एवं वास्तुकला विद्यालय (एसपीए), नई दिल्ली की प्रोफेसर डा. अर्पिता दयाल को तकनीकी सहयोग की जिम्मेदारी सौंपी गई है। स्थानीय निकाय विशेषज्ञों से संपर्क कर प्रस्ताव तैयार करेंगे ताकि हब का निर्माण

आधुनिक और सुव्यवस्थित ढंग से हो सके। सूडा की सहायक निदेशक मोनिका वर्मा द्वारा जारी निर्देशों में सभी नगर आयुक्तों और अधिशासी अधिकारियों को जल्द से जल्द प्रस्ताव तैयार कर मुख्यालय भेजने को कहा गया है। वहीं, राज्य नगरीय आजीविका मिशन की मिशन निदेशक अपूर्वा दुबे ने जिलाधिकारियों और डूडा अधिकारियों को इस योजना को प्राथमिकता के आधार पर आगे बढ़ाने के निर्देश दिए हैं। डूडा परियोजना अधिकारी राजू कुमार ने कहा कि योजना के तहत भूमि तलाश की जा रही है।



# द्विधा केस

## CBI की FIR में क्या?



### इन धाराओं में हुआ केस दर्ज

- BNS धारा 80(2) : दहेज मौत का केस दर्ज
- BNS धारा 85 : पति/रिश्तेदारों द्वारा क्रूरता
- BNS धारा 3(5) : साझा आपराधिक जिम्मेदारी
- दहेज निषेध कानून की धाराएं भी लगाई गईं

- भोपाल पुलिस की FIR अब CBI FIR का हिस्सा
- द्विधा और समर्थ की शादी 9 दिसंबर 2025 को हुई थी
- शादी में करीब ₹2 लाख दहेज दिए जाने का आरोप
- फरवरी से दहेज को लेकर ताने और प्रताड़ना शुरू
- परिवार पर "हैसियत के मुताबिक खर्च नहीं" करने के आरोप
- द्विधा को निजी खर्च के लिए पैसे नहीं दिए जाते थे
- पिता को ऑनलाइन पैसे भेजने पड़ते थे
- अप्रैल में द्विधा गर्भवती हुई थी



दिल्ली HC ने कॉकरोच जनता पार्टी का  
X अकाउंट बहाल करने से मना किया



दिल्ली में राहुल से मिले पूर्व  
सीएम सिधरमाईया

## रिश्तों का सूनापन-करोड़ों की कोठी में अकेलेपन से हार गईं दो जिंदगियां

बुजुर्ग ननद-भाभी की मौत ने छोड़े सवाल

नई दिल्ली, एजेंसी। मध्य दिल्ली के राजिंदर नगर इलाके में बुधवार सुबह एक घर के अंदर दो बुजुर्ग महिलाओं के शव संदिग्ध हालात में मिलने से सनसनी फैल गई। मृतकों की पहचान 80 वर्षीय सरोज बाला और उनकी भाभी चंद्रकांता के रूप में हुई है। मध्य जिला पुलिस ने बताया कि घर में जबरन प्रवेश के संकेत नहीं मिले हैं। राजधानी की भीड़, चमक और भागती जिंदगी के बीच राजिंदर नगर के एक पुराने घर में दो बुजुर्ग महिलाएं चुपचाप जिंदगी से हार गईं। आसपास करोड़ों के अपार्टमेंट्स खड़े थे, सड़क पर गाड़ियों का शोर था, लोग अपने-अपने काम में व्यस्त थे लेकिन उस घर के भीतर मौत आई और दोनों को लेकर चली गई लेकिन किसी को भनक तक नहीं लगी। घर की सफाई करने जब कामवाली पहुंची तो तेज बदबू से अनहोनी का अहसास हुआ। कमरे में 80 वर्षीय सरोज और उनकी भाभी चंद्रकांता मृत मिलीं। बुजुर्ग ननद-भाभी की मौत दो जिंदगियों का अंत नहीं बल्कि महानगरों में बढ़ती उस खामोशी की कहानी है, जहां लोग पास रहकर भी एक-दूसरे से दूर हो गए हैं।



घर के अंदर दो बुजुर्ग महिलाओं के शव मिलने से सनसनी  
20 करोड़ का घर और सरकारी पेंशन लेकिन खामोश जिंदगी

20 करोड़ का घर और सरकारी पेंशन लेकिन खामोश जिंदगी  
पड़ोसियों ने घर की कीमत करीब 20 करोड़ रुपये बताई है लेकिन इसके भीतर रहने वाली दोनों बुजुर्ग महिलाओं की दुनिया बेहद छोटी और खामोश थी। पड़ोस में रहने वाले 74 वर्षीय श्रीधर बताते हैं, कि सरोज से कभी-कभार दूध लेने जाते वक्त मुलाकात हो जाती थी। वो बहुत कम बोलती थीं। सरोज अविवाहित थीं और बिजली विभाग से सेवानिवृत्त थीं। उनके भाई भारतीय सेना में थे, जिनकी कोरोना काल में मृत्यु हो गई थी। भाई की पत्नी चंद्रकांता लंबे समय से बीमार थीं और घर से बाहर नहीं निकलती थीं। दोनों की कोई संतान भी नहीं थी।

### प्रकृति का कहर या निर्माण की लापरवाही

## छह जिंदगियां मलबे में दफन

हमीरपुर, संवाददाता। बेतवा नदी पर मवाई जार और कुरारा को जोड़ने के लिए निर्माणाधीन पुल का एक हिस्सा गुरुवार देर रात तेज आंधी-तूफान के दौरान ढह गया। इस हादसे में छह मजदूरों की मौत हो गई। प्रशासन ने मामले की जांच के आदेश दिए हैं, जबकि सुरक्षा मानकों की अनदेखी को लेकर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। हमीरपुर में बेतवा नदी की लहरों के बीच निर्माणाधीन पुल का स्लैब ढहने से छह मजदूरों की मौत ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। सवाल यह है कि आखिर भीषण आंधी-तूफान की चेतावनी के बावजूद मजदूरों को असुरक्षित निर्माण स्थल के नीचे विश्राम करने को क्यों मजबूर होना पड़ा? मलबे में दफन हुई छह जिंदगियां अब उस सुरक्षा कवच पर बड़े सवाल उठा रही हैं, जो महज कागजों तक सीमित नजर आ रहा है। इधर, एसडीआरएफ का रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है और उधर, उन परिवारों के आंसू प्रशासनिक अनदेखी की दास्तान बयां कर रहे हैं।

### प्रकृति का कहर और निर्माण की लापरवाही

गुरुवार की रात हमीरपुर के लिए एक भयावह याद बन गई। मवाई जार और कुरारा को जोड़ने के लिए बेतवा नदी पर बन रहे पुल पर काम कर रहे मजदूरों के लिए रात का सन्नाटा मौत का मंजर बनकर आया। प्रकृति के कहर और निर्माण की लापरवाही के बीच कैसे हुई यह पूरी घटना, आइए समझते हैं घटनाक्रम।

### रात तीन बजे का खौफनाक मंजर

निर्माणाधीन पुल के पास श्रमिक अपना काम निपटाकर पुल के स्लैब के नीचे और आसपास आराम कर रहे थे। अचानक आसमान में बिजली कड़की और तेज आंधी-तूफान का दौरा शुरू हुआ। हवा की रफतार इतनी प्रचंड थी कि निर्माणाधीन पुल का विशाल स्लैब अपना संतुलन खो बैठा और देखते ही देखते भरभराकर नीचे आ गिरा।



## BPSC टीचर पत्नी का शर्मनाक कारनामा!

जिस पति ने अपनी जमीन बेचकर पत्नी को पढ़ाया, उसी पत्नी ने टीचर बनते ही प्रेमी के साथ नई दुनिया बसा ली!



जब पति ने किराए के मकान में दोनों को रंगे हाथों पकड़ा, तो 10 साल के बेटे ने खुद पुलिस और पिता के सामने अपनी ही माँ की पोल खोल दी!

मम्मी बुरी है, मैं उनके साथ नहीं जाऊंगा





# क्या फिर बनेगी 'हाइवे' वाली जादुई जोड़ी

इम्तियाज अली ने दिया बड़ा हिट, कहा- 'मेरी नजर फिर आलिया भट्ट पर है'

**एंटरटेनमेंट डेस्क।** इम्तियाज अली ने 2014 में आलिया भट्ट के साथ 'हाइवे' फिल्म बनाई थी। अब हाल ही में डायरेक्टर ने आलिया के साथ दूसरी फिल्म बनाने का बड़ा हिट दिया है। जानिए इम्तियाज ने क्या कुछ कहा। इम्तियाज अली और आलिया भट्ट ने फिल्म 'हाइवे' के साथ हिंदी सिनेमा की सबसे यादगार एक्टर-डायरेक्टर जोड़ियों में से एक बनाई थी। दोनों ने अब तक सिर्फ एक ही फिल्म साथ में की है, लेकिन 2014 में आई यह रोड ड्रामा आज भी उनके करियर की खास फिल्मों में गिनी जाती है। इस फिल्म ने आलिया के एक्टिंग करियर को एक नई दिशा दी और इम्तियाज को ऐसे निर्देशक के तौर पर और मजबूत किया जो इमोशंस से भरे किरदार बनाते हैं।

**आलिया को लेकर क्या बोले इम्तियाज?**

अब, एक दशक से ज्यादा समय बाद, इम्तियाज अली ने इशारा दिया है कि शायद दोनों फिर से साथ काम कर सकते हैं। इंडिया टुडे से बातचीत में इम्तियाज ने आलिया के बारे में बात करते हुए कहा, 'मैंने उन्हें हाल ही में देखा और वो बहुत खूबसूरत लग रही थीं। तो अब मेरी नजर फिर से उन पर है।'

**हाइवे की यादें हुईं ताजा**

हालांकि इम्तियाज ने यह साफ नहीं किया कि कोई नया प्रोजेक्ट बन रहा है या नहीं, लेकिन उनकी बातों से 'हाइवे' की यादें फिर ताजा हो गईं और यह दिखाता है कि उस फिल्म का असर कितना गहरा था।

**इम्तियाज अली और आलिया भट्ट का वर्कफ्रंट**

काम की बात करें तो इम्तियाज अली की अगली फिल्म 'मैं वापस आऊंगा' आने वाली है, जिसमें शरवरी वाघ, वेदांग रैना, दिलजीत दोसांझ और नसीरुद्दीन शाह नजर आएंगे। वहीं आलिया भट्ट के पास भी कई बड़ी फिल्में हैं, जिनमें 'अल्फा' और संजय लीला भंसाली की 'लव एंड वॉर' शामिल हैं।

**मौनी राय को सताई दिशा पाटनी की याद**

**स्पेशल पोस्ट शेयर कर थोड़ी देर में कर दिया डिलीट**

**एंटरटेनमेंट डेस्क।** अभिनेत्री मौनी रॉय और दिशा पाटनी बेस्ट फ्रेंड हैं। अक्सर दोनों को साथ पार्टी करते देखा जाता है। हाल ही में मौनी ने दिशा के लिए एक स्पेशल पोस्ट शेयर किया है। मगर, थोड़ी देर में ही इसे डिलीट कर दिया। जानिए उन्होंने ऐसा क्या लिखा? अभिनेत्री मौनी रॉय और दिशा पाटनी के बीच अच्छी दोस्ती है। दोनों पार्टी और इवेंट में अक्सर साथ नजर आती हैं। हाल ही में मौनी रॉय ने एक सोशल मीडिया पोस्ट में दिशा पाटनी पर प्यार लुटाया। उन्होंने दिशा को अपनी श्रद्धा बहन कहते हुए स्पेशल नोट लिखा है। मगर, थोड़ी ही देर में उन्होंने यह पोस्ट हटा दिया।

**दिशा पाटनी के लिए मौनी का स्पेशल पोस्ट**

मौनी रॉय ने दिशा पाटनी के लिए साझा किए गए स्पेशल पोस्ट में उन्हें याद करते हुए छोटी बहन कहा। मगर, इसे कुछ देर बाद ही हटा दिया। मगर, उनके इस पोस्ट के स्क्रीनशॉट अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं। मौनी रॉय ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर यह पोस्ट साझा की थी। उन्होंने दिशा के साथ अपनी एक फोटो साझा की थी।

## बाक्स ऑफिस पर सुनामी

**एंटरटेनमेंट डेस्क।** साउथ सिनेमा में एक बार फिर से एक और नई कहानी पर्दे पर पेश होने जा रही है। जी हां, पिछले काफी वक्त फिल्म नागाबंधम को लेकर बना हुआ जबरदस्त बज लगातार बढ़ता जा रहा है। इस फिल्म को लेकर दर्शक काफी उत्साहित हैं और हाल ही में फिल्म से जुड़ा एक पोस्टर साझा किया गया है। बीते दिनों ही नागाबंधम का टीजर रिलीज किया गया था, जिसने दर्शकों की एक्साइटमेंट को बढ़ा दिया था। टीजर इतना शानदार था कि लोगों ने इसके ट्रेलर की डिमांड तक कर डाली और अब जैसे-जैसे फिल्म की रिलीज डेट नजदीक आ रही है, मेकर्स इससे जुड़े पोस्टर को रिलीज कर रहे हैं। हाल ही में फिल्म का एक पोस्टर रिलीज किया गया है, जिसमें फिल्म की पूरी स्टारकास्ट नजर आई है। पोस्टर में विराट कर्ण, ऋषभ साहनी, नाभा नतेश और जगपति बाबू सहित पूरी स्टारकास्ट एक साथ एक ही पावरफुल फ्रेम में नजर आ रही है। इस नए पोस्टर को देखकर साफ अंदाजा लगाया जा सकता है कि फिल्म के हर किरदार के पीछे कोई न कोई गहरा राज और छिपी हुई कहानी है, जिसने दर्शकों को फिल्म के इस रहस्य से पर्दा उठाने के लिए और भी ज्यादा उत्सुक कर दिया है।



**मौनी के पोस्ट पर क्या बोलीं दिशा पाटनी?**

बीते दिन मौनी रॉय ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर कान फिल्म फेस्टिवल से अपनी खूबसूरत फोटोज शेयर कीं। साथ कैप्शन में लिखा- 'कान और केओस।' फोटोज में मौनी ब्लैक बॉडीकॉन ड्रेस में नजर आईं। साथ ही उन्होंने एक जैकेट भी कैरी की थी, जो उन्होंने हाथों पर रखी हुई थी। मौनी के पोस्ट पर दिशा पाटनी ने कमेंट किया है, लेट्स गो गर्ल।

**जैकलीन की तारीफ में कही ये बात**

मौनी के साथ-साथ दिशा पाटनी ने जैकलीन फर्नांडिस का हौसला भी बढ़ाया है। जैकलीन ने भी बीते दिन इंस्टाग्राम अकाउंट से कान फिल्म फेस्टिवल का लुक साझा किया। इस पर दिशा पाटनी ने रिएक्शन दिया। उन्होंने लिखा, ब्यूटी। साथ ही रेड हार्ट इमोजी भी बनाए।

## कान फिल्म फेस्टिवल से मौनी राय का लुक देख बोलीं जिगरी दोस्त दिशा पाटनी

**एंटरटेनमेंट डेस्क।** मौनी रॉय इन दिनों कान फिल्म फेस्टिवल में पहुंची हैं। बीते दिन उन्होंने अपना लुक शेयर किया। उनके पोस्ट पर जिगरी दोस्त एक्ट्रेस दिशा पाटनी ने हौसला बढ़ाया। मौनी रॉय इन दिनों अपनी निजी जिंदगी में आए उतार-चढ़ाव को लेकर सुर्खियों में हैं। उनकी शादीशुदा जिंदगी बिखर गई है। वे पति सूरज नांबियार से अलग हो रही हैं। इस बारे में खुद मौनी और सूरज साझा बयान जारी कर चुके हैं। इस बीच मौनी फ्रांस में चल रहे कान फिल्म फेस्टिवल में शिरकत करने पहुंची हैं। दिशा पाटनी ने मौनी का हौसला बढ़ाया है।

**दिशा पाटनी ने की मौनी और जैकलीन की तारीफ**

कान फिल्म फेस्टिवल में मौनी रॉय और जैकलीन फर्नांडिस दोनों पहुंची हैं। दोनों अदाकाराओं ने सोशल मीडिया पर अपने दिलकश फोटोज शेयर किए। मौनी रॉय और दिशा पाटनी की पक्की दोस्ती किसी से छिपी नहीं है। अक्सर दोनों को साथ में पार्टी करते और आउटिंग पर जाते देखा जाता है।

150

सुरमेदानी  
साल पुरानी दादी की

दीवारों पर  
लगी कुरान  
की आयतें,  
करोड़ों का है  
24 साल की  
हसीना का  
शाही घर







विनेश को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत  
एशियाड के ट्रायल्स में भाग लेने की दी इजाज

स्पोर्ट्स डेस्क। सुप्रीम कोर्ट ने पहलवान विनेश फोगाट को एशियन गेम्स 2026 के चयन ट्रायल्स में हिस्सा लेने की अनुमति दे दी है। ट्रायल्स 30 और 31 मई को आयोजित होने हैं। कोर्ट ने कहा कि इस चरण पर विनेश को वापस भेजना उचित नहीं होगा। मामले की अगली सुनवाई अगले सप्ताह होगी। भारतीय पहलवान विनेश फोगाट को एशियन गेम्स 2026 चयन ट्रायल्स में हिस्सा लेने की अनुमति मिल गई है। सुप्रीम कोर्ट ने यह राहत दी। इससे पहले भारतीय कुश्ती संघ ने दिल्ली हाई कोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी थी, जिसमें विनेश फोगाट को ट्रायल्स में भाग लेने की अनुमति दी गई थी।

सुप्रीम कोर्ट की पीठ, जिसमें जस्टिस पी.एस. नरसिम्हा और जस्टिस आलोक आराधे शामिल थे, ने मामले की सुनवाई करते हुए विनेश फोगाट के पक्ष में फैसला सुनाया। अदालत ने कहा कि इस स्तर पर उन्हें ट्रायल से बाहर करना उचित नहीं होगा। पीठ ने सुनवाई के दौरान कहा, अगर यह कोई और खिलाड़ी होती तो मामला अलग हो सकता था। उन्होंने देश का नाम रोशन किया है। इडब्ल्यूएफआई की ओर से पेश वकील को संबोधित करते हुए अदालत ने आगे कहा, आज इस स्तर पर, जब हाई कोर्ट आदेश दे चुका है, उम्मीदें और अपेक्षाएं बढ़ चुकी हैं।

अब उन्हें यह कह देना कि वापस घर जाइए क्योंकि हम कुछ नहीं कर सकते, यह उचित नहीं होगा। हम आपको यह बहुत स्पष्ट रूप से कह रहे हैं। दिल्ली हाई कोर्ट ने 22 मई को दिए गए आदेश में विनेश फोगाट को 30 और 31 मई को होने वाले एशियन गेम्स चयन ट्रायल्स में हिस्सा लेने की अनुमति दी थी। हाई कोर्ट ने माना था कि 'थ' की चयन नीति मातृत्व अवकाश के बाद लौटने वाली खिलाड़ियों की परिस्थितियों को ध्यान में नहीं रखती। अदालत ने कहा था, शपिलकर्ता (विनेश फोगाट) को एशियन गेम्स 2026 के चयन ट्रायल्स में भाग लेने की अनुमति दी जाती है। हाई कोर्ट ने यह भी निर्देश दिया था कि ट्रायल्स की वीडियो रिकॉर्डिंग की जाए और उनकी निगरानी भारतीय खेल प्राधिकरण तथा भारतीय ओलंपिक संघ के स्वतंत्र पर्यवेक्षक करें।

करें। 

**आईपीएल 2026  
के बीच सबसे  
चौंकाने वाली खबर  
टूटेगा हार्दिक  
पांड्या और मुंबई  
इंडियंस का साथ!**

## दी नेक्स्ट पोस्ट

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक  
बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन  
ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा  
हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर  
गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी  
गंगा टोला, निकट जानकी  
बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर  
पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित ।  
पिन:- 273003

**UPHIN/2023/90814**

**बूजेन्द्र कुमार**

मो०. नं०. 7307180148,9170772370

Email- [thenextpost01@gmail.com](mailto:thenextpost01@gmail.com)

**नोट:-** समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होंगे।

**15 साल का तूफान...**  
**पाकिस्तान भी बोला- ये**  
**बच्चा अलग लेवल का है**



**नई दिल्ली, एजेन्सी ।** आईपीएल 2026 में वैभव सूर्यवंशी की विस्फोटक बल्लेबाजी ने पाकिस्तान को भी हैरान कर दिया है। मोहम्मद यूसुफ ने उनकी तुलना शाहिद अफरीदी से की, जिस पर सोशल मीडिया पर बहस छिड़ गई। वहीं, कामरान अकमल और बासित अली ने वैभव को भविष्य का श्यूनिवर्स बॉस तक बता दिया। आईपीएल 2026 में किसी एक खिलाड़ी, जिसने सबसे ज्यादा तहलका मचाया है, वह खिलाड़ी है वैभव सूर्यवंशी।

15 साल के राजस्थान रॉयल्स के इस बल्लेबाज ने अपने दम पर टीम को क्वालिफायर-2 तक पहुंचाया है। लगभग हर मैच में उनके बल्ले से रन निकले हैं और स्ट्राइक रेट का तो क्या ही कहना। वैभव की ताबड़तोड़ बल्लेबाजी देख पाकिस्तान भी चौंक गया है। इस 15 साल के विस्फोटक बल्लेबाज को लेकर पाकिस्तान से भी प्रतिक्रियाएं आ रही हैं।

पाकिस्तान के पूर्व बल्लेबाज और रन मशीन के नाम से मशहूर मोहम्मद युसुफ ने

वैभव की तुलना शाहिद अफरीदी से की तो फैंस भड़क गए और कहा कि अफरीदी भी वैभव के सामने कुछ नहीं हैं। वहीं, कामरान अकमल और बासित अली भी

कप्तान शाहिद अफरीदी से की है। यूसुफ ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर वैभव सूर्यवंशी की जमकर तारीफ की। उन्होंने लिखा,

## आईपीएल के एक सीजन में सबसे ज्यादा छक्के

**वैभव सूर्यवंशी**  
**65 छक्के**  
**कितनी गेंदें**  
**खेलीं: 279**

**क्रिस गेल**  
59 छक्के  
कितनी गेंदें  
खेलीं: 456

वैभव की बल्लेबाजी देख चौंक गए हैं।  
सूर्यवंशी की तुलना शाहिद अफरीदी  
से!

वैभव सूर्यवंशी की तुलना लगातार क्रिकेट के दिग्गज खिलाड़ियों से हो रही है। कई विशेषज्ञ उन्हें डॉन ब्रैडमैन और सचिन तेंदुलकर जैसे महान खिलाड़ियों के साथ जोड़कर देख रहे हैं। इसी बीच पाकिस्तान के पूर्व बल्लेबाज मोहम्मद यूसुफ ने सूर्यवंशी की तुलना पाकिस्तान के पूर्व

चौके और 12 छक्के लगाए। उनका स्ट्राइक रेट 334.48 का रहा। इस सीजन वह ऑरेंज कैप की दौड़ में सबसे आगे हैं। उन्होंने 15 मैचों में 45.33 की औसत और 242.85 के स्ट्राइक रेट से 680 रन बनाए हैं। इस दौरान उनके बल्ले से एक शतक और चार अर्धशतक निकले हैं। सूर्यवंशी इस सीजन सबसे ज्यादा 65 छक्के लगाने वाले बल्लेबाज भी हैं। इसके अलावा उन्होंने 55 चौके भी जड़े हैं।

मानसिक रूप से थक  
चुके थे हार्दिक

एक आईपीएल सूत्र ने न्यूज एजेंसी पीटीआई को बताया, शार्दिक लगातार दबाव और खराब नतीजों से काफी परेशान थे। वह मानसिक रूप से तनाव में थे और पूरी तरह थक चुके थे। उन्हें पीठ में चोट भी लगी थी। प्लेऑफ की उम्मीद खत्म होते ही उन्होंने टीम प्रबंधन को बता दिया था कि वह आगे टीम के साथ नहीं रहेंगे। शार्दिक ने 2024 में रोहित शर्मा की जगह मुंबई इंडियंस की कप्तानी संभाली थी।

## तीन सीजन मुश्किलों में बीते

पिछले तीन सीजन में मुंबई का प्रदर्शन कुछ खास नहीं रहा है। टीम पिछले सीजन प्लेऑफ में जरूर पहुंची, लेकिन क्वालिफायर-2 में पंजाब से हारकर बाहर हो गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, हार्दिक को उम्मीद थी कि टीम में सभी खिलाड़ी एक दिशा में काम करेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। सूत्र ने बताया, मुंबई इंडियंस का ड्रेसिंग रूम वैसा नहीं था, जैसा हार्दिक 2021 में छोड़कर गए थे। हर सीनियर खिलाड़ी एक राय पर नहीं था। अगर नतीजे अच्छे आते तो शायद निराशा इतनी ज्यादा नहीं होती, लेकिन जब हर कोई अलग दिशा में सोचने लगे तो मानसिक दबाव बढ़ जाता है। इसी वजह से हार्दिक ने तय कर लिया था कि वह अगले सीजन में मुंबई इंडियंस का हिस्सा नहीं होंगे।

**स्पोर्ट्स डेस्क।** आईपीएल 2026 में खराब प्रदर्शन और लगातार दबाव के बाद हार्दिक पांड्या के मुंबई इंडियंस छोड़ने की खबरें सामने आई हैं। रिपोर्ट के मुताबिक हार्दिक मानसिक रूप से थके हुए थे और उन्होंने सीजन के बीच में ही फ्रेंचाइजी प्रबंधन को अपने फैसले की जानकारी दे दी थी। अब सवाल यह है कि मुंबई इंडियंस का अगला कप्तान कौन होगा।

आईपीएल 2026 में मुंबई इंडियंस के निराशाजनक प्रदर्शन के बाद हार्दिक पांड्या से इस फ्रेंचाइजी के रिश्तों को लेकर बड़ा विवाद सामने आया है। न्यूज एजेंसी पीटीआई के रिपोर्ट के मुताबिक, हार्दिक

पांड्या अगले सीजन में मुंबई इंडियंस का हिस्सा नहीं रहना चाहते और उन्होंने यह फैसला सीजन के बीच में ही टीम प्रबंधन को बता दिया था। बीच सीजन यानी आईपीएल 2026 के 44वें मैच और मुंबई के चेन्नई के खिलाफ इस सीजन दूसरे मैच के बाद हार्दिक अचानक टीम से गायब हो गए थे। न ही वह टीम के साथ यात्रा करते दिखे और न ही टीम के साथ डग आउट में दिखे थे। तब एमआई ने बताया था कि उनको चोट लगी है और इसी वजह से नहीं खेल रहे हैं। हालांकि, अब यह बात भी सामने आ रही है कि हार्दिक और एमआई के बीच सबकुछ ठीक नहीं चल रहा है।

## मानसिक तनाव, असहयोग या फिर खराब नतीजे

# छोड़ने जा रहे हार्दिक पाण्डेया